चातुर्वेदसंस्कृतप्रचार-ग्रन्थमाला-००४

# भारतीय-वैभव-ज्ञानमाला

वरिष्ठ एवं स्नातक वर्ग

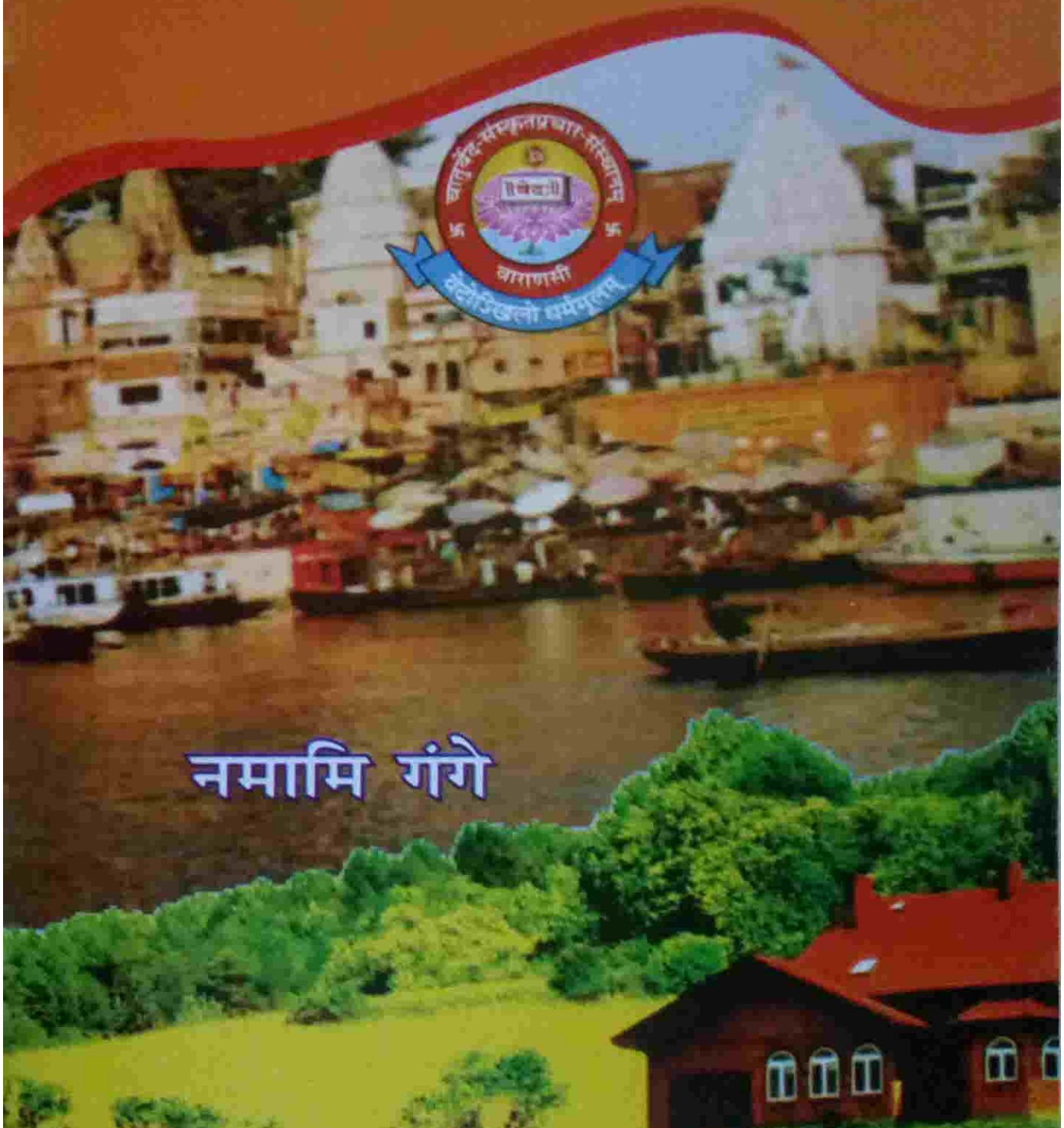


* प्रकाशकः *

卐 चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम् 卐

काशी , ( उ०प्र० )

प्रिय छात्रों,

आप को पता ही है कि हमारा देश भारत एक विशाल देश है। विभिन्न मत, पन्थ, सम्प्रदाय एवं धर्म को मानने वाले लोग यहाँ भाई चारे के साथ रहते हैं। विविधता में एकता हमारी पहचान है। इस देश ने सम्पूर्ण मानव को सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढाया है। ज्ञान-विज्ञान के प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद को दिया है। आज ज्ञान-विज्ञान जो प्रगति कर रहा है उस प्रगति का दृष्टिकोण वेद, स्मृति, पुराणादि विशाल संस्कृत साहित्य है। सभी धर्म, विचार इसके बाद ही अस्तित्व में आये।

हमारे धर्मग्रन्थों में जड-चेतन, प्रकृति-पुरुष सभी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जीवन सुख-दुःख दोनों से युक्त है, अतः दुःखों, कष्टों, परेशानियों से मुक्ति के लिए बहुत से उपाय बताये गये हैं। प्रकृति को ईश्वर का अप्रतिम उपहार कहा है। इस उपहार को हम अपना धरोहर बनावें। जीवन के उत्कर्ष- अपकर्ष का सामना कर सुख का मार्ग प्रशस्त करें। इसके लिए जीवन को स्वस्थ बनाना होगा क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। स्वस्थ मस्तिष्क सुसंस्कृत समाज और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करता है। कहा भी गया है- 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्' (धर्म - कार्य को सम्पन्न करने का प्रथम साधन है शरीर। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पं0 मदन मोहन मालवीय जी छात्रों को हमेशा कहते थे- सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति, आत्मत्याग के द्वारा अपने समाज में सम्मान के योग्य बनो।

**सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।**
**देशभक्त्याऽत्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव।।**

## भारतीयवैभव-ज्ञानपरीक्षा के द्वारा एक आह्वान

वन, नदियाँ मानव समाज के लिए वरदान होते हैं। अनेक ऋषि-मुनियों ने इन पवित्र नदियों के तट पर, वृक्षों के नीचे बैटकर तप किया, अपने अपने मनोरथों को पूर्ण किया है। हमारे देश भारत में इनका सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक महत्त्व है। देश की अपनी धरा को हरा-भरा तथा स्वच्छ करने के लिए सरकार के साथ आप और हम मिलकर नदियों को स्वच्छ रखें, वृक्षारोपण करें, आरोपित वृक्षों का संरक्षण करें अपनी धरा को सजाएँ। अपनी मातृभूमि को स्वर्ग से सुन्दर बना कर प्रकृति को उपहार दें।

आइये हम संकल्प लें जन्मदिन पर वृक्ष लगायेंगे पृथ्वी को हरा-भरा बनायेंगे। अपने आस-पास कहीं वृक्ष कटे, गिरे, या सूखे तो वहाँ वृक्षारोपण को प्रेरित करें या स्वयं वहाँ वृक्ष लगायें। वृक्ष लगाने की स्पर्धा करें, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर प्राकृतिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य का उपहार प्राप्त करें।

सधन्यवाद!

प्रकाशकः
**चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्**
सम्पर्कसङ्केतः
**मञ्जूत्रिशक्तिभवनम्**
सी.के. 66/22 वेनियाबागः, वाराणसी
csps.kashi@gmail.com
चातुर्वेद-संस्कृतप्रचार-संस्थानम्

आपका अपना
**डॉ. चन्द्रकान्तदत्त शुक्ल**
लेखक/संपादक/परीक्षा संयोजक
8318867067

# वैदिक-राष्ट्रगानम्

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा, राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुः वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिः, योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां, निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमो नः कल्पताम्। यजुर्वेदः 22/22

भारत वर्ष हमारा प्यारा, अखिल विश्व से न्यारा
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन्! देश हमारा।।

हों ब्राह्मण विद्वान् राष्ट्र में, ब्रह्मतेज व्रत-धारी,
महारथी हों शूर धनुर्धर, क्षत्रिय लक्ष्य-प्रहारी।
गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की, रहें बहाती धारा।
सब साधन से रहे समुन्नत.....।।1।।

भारत में बलवान् वृषभ हों, बोझ उठायें भारी,
अश्व आशुगामी हो, दुर्गम पथ में विचरणकारी।
जिनकी गति अवलोक लजाकर, हो समीर भी हारा
सब साधन से रहे समुन्नत.....।।2।।

महिलाएँ हो सती सुन्दरी, सद्गुणवती सयानी,
रथारूढ भारतवीरों की, करें विजय-अगवानी।
जिनकी गुण-गाथा से गुंजित दिग्-दिगन्त हो सारा
सब साधन से रहे समुन्नत.....।।3।।

यज्ञ- निरत भारत के सुत हों, शूर सुकृत-अवतारी,
युवक कहाँ के सभ्य सुशिक्षित, सौम्य सरल सुविचारी,
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का, भावी सुदृढ़ सहारा।
सब साधन से रहे समुन्नत.....।।4।।

समय-समय पर आवश्यकता वश, रस घन बरसाये,
अनौषथ में लगें प्रचुर फल और स्वयं पक जायें।
योग हमारा, क्षेम हमारा स्वतः सिद्ध हो सारा,
सब साधन से रहे समुन्नत.....।।5।।

- क.वेदकथाङ्क (गीताप्रेस)

# धन्यास्तु भारतभूमिः

**अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा,**
**हिमालयो नाम नगाधिराजः।**
**पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,**
**स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥** -कुमारसम्भवम् 1/1

भारतवर्ष की उत्तरदिशा में देवतात्मा हिमालय नाम का पर्वतराज है। जो पूरब और पश्चिम के समुद्र के जल का अवगाहन करते हुए पृथ्वी के मानदण्ड स्वरूप स्थित है।

**गायन्ति देवाः किल् गीतकानि,**
**धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे।**
**स्वर्गापवर्गास्पद हेतु भूताः,**
**भवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वात् ॥** -विष्णुपुराणम्

भारतवर्ष की महिमा का गान देवता लोग भी किया करते हैं। क्योंकि यही भूमि स्वर्ग और अपवर्ग का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः देवता लोग भी यहाँ जन्म लेने की इच्छा करते हैं। धन्य है हमारी मातृभूमि भारत।

**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः** (अथर्ववेद - 12.1.12)

भूमि हमारी जननी (माता) है और मैं उसका पुत्र हूँ।

# प्राचीनं भारतम्

| | |
|---|---|
| **भारतस्य उत्तरी सीमा-** | हिमालयतः त्रिविष्टपं (तिब्बत) यावत्। अत्रैव 'कैलास मानसरोवरः' अस्ति। |
| **उत्तर-पश्चिमी सीमा-** | उपगणस्थानम् (अफगानिस्तान)यावत्। एतत् स्थानं सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य - अशोकादि राज्यकाले भारतस्य अङ्गम् आसीत्। महाभारतकाले अस्य एव नाम गान्धारः आसीत्। 'गान्धारी' अत्र एव अभवत्। |
| **पूर्व-दिशि-** | ब्रह्मदेशः (म्याँमार) पर्यन्तम् । |
| **पाकिस्तानम्-** | 1972 ईस्वीतः पूर्वं पूर्वी पाकिस्तान-देशः अपि भारतस्य अङ्गम् आसीत् । |
| **बांग्लादेशः-** | पूर्वं भारतस्य अङ्गम् आसीत् । |
| **दक्षिणे-** | हिन्दमहासागरे स्थितः द्वीपः श्रीलंका कदाचित् अस्माकं देशस्य भागः आसीत्। |

# भारतीया संस्कृतिः

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा " (यजु0 7.14)

(वह भारतीय वैदिकसंस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन और श्रेष्ठ संस्कृति है। )

**संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति-**

सम् उपसर्गकः कृञ् धातुः, क्तिन् प्रत्ययः, भूषण (शोभा या अलंकार) अर्थे सुट् आगमः 'संस्कृतिः' इति सिध्यति। (सम्+सुट्+कृ+क्तिन् = मकारस्य अनुस्वारः, प्रथमा-विभक्ति-एकवचने संस्कृतिः इति। 'संस्कृति' शब्दस्यार्थः - सुन्दरम्, श्रेष्ठः, परिष्कृतम्।

**परिभाषा-**

**श्री के.एम. मुन्शी-** हमारे रहन-सहन के पीछे जो हमारी मानसिक प्रकृति है जिसका उद्देश्य जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है, वही संस्कृति है।

**जी.पी0 सिंहलः-** संस्कृति में वे संस्कार होते हैं जो व्यक्ति और राष्ट्र के प्रत्येक व्यवहार में दृष्टिगोचर होते हैं।

**डॉ0 सम्पूर्णानन्दः-** मानव के जिन कार्यों से किसी देश-विशेष के सम्पूर्ण समाज पर कोई अमिट छाप पड़े, वही स्थायी प्रभाव ही संस्कृति है।

**हजारी प्रसाद द्विवेदी-** संस्कृति मनुष्य की ऊर्ध्वगामिनी प्रवृत्ति का विकास है।

इस प्रकार संस्कृति मानव जीवन के अन्तरङ्ग स्वरूप को प्रकाशित करती है। मनुष्य स्वभावतः विवेकशील प्राणी है । वह अपने विवेक से अपने चारों तरफ के वातावरण को निरन्तर परिष्कृत करता रहता है तथा जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण स्थापित करता है। इस तरह इसमें धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला सामाजिक व राजनैतिक संस्थाओं एवं प्रथाओं का समावेश रहता है। **संस्कृति का सम्बन्ध** मानव-बुद्धि, स्वभाव और उनकी मनोवृत्ति से होता है जिनके सहयोग से मनुष्य अपना विकास करता है। संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समूचे समाज में ओतप्रोत रहती है तथा असंख्य व्यक्तियों के युग-युग के प्रयासों का परिणाम होता है। यही राष्ट्रीय संस्कृति कहलाती है।

"संस्कृति मानव-जीवन की शक्ति, प्रगति-साधनों की विमल विभूति तथा राष्ट्रीय आदर्श की गौरवमयी मर्यादा है।"

**सभ्यता-**

सभ्यता का अर्थ है सभा या समाज में रहने व बैठने की योग्यता। 'सभा' से यत् तथा तल् प्रत्यय लगकर 'सभ्यता' शब्द की निष्पत्ति होती है। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची शब्द है 'सिविलाइजेशन' (Civiligetion) जिसका सम्बन्ध सिविल (Civil) नागरिक से है।

## संस्कृति और सभ्यता में अन्तर-

| संस्कृति- | सभ्यता- |
|---|---|
| 1. यह सम्यक् कृति है | 1. यह सामाजिक नियम एवं व्यवहार का आचरण है। |
| 2. यह आभ्यान्तर है | 2. यह वाह्य है। |
| 3. यह स्थायी है, सूक्ष्म है, | 3. अस्थायी है, सहजतया परिवर्तनशील है । |
| 4. यह आत्मा है। | 4. यह शरीर है। |
| 5. मानसिक एवम् आन्तरिक है। | 5.यह वाह्य तथा भौतिक है। |

अतः जीवन-व्यापार के आदर्शों के जो संस्कार किसी राष्ट्र में अथवा व्यक्ति में स्थापित होते हैं वह संस्कृति तथा उनके आधार पर जो भौतिक सुविधाओं का निर्माण करते हैं वह सभ्यता है। हमारे रहन-सहन का ढंग, हमारी कार्य प्रणाली, हमारी राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप हमारे वैज्ञानिक और भौतिक साधन हमारी सभ्यता के स्तर के मापदण्ड हैं, किन्तु उनमें निहित सिद्धान्त तथा मूल्य, आदर्श तथा दर्शन हमारे सांस्कृतिक विकास के सूचक हैं।

**भारतीय-संस्कृतेः वैशिष्ट्यम्-**

**1. सर्वप्राचीनता/ सनातनता-** भारतीय संस्कृति मानव-सभ्यताकाल से आज तक अक्षुण्ण बनी हुई है। हड़प्पा, मोहन जोदड़ों, पूर्वपाषाणकाल में खुदाई से प्राप्त अवशेष इसकी प्राचीनता और सर्वोत्कृष्टता को सिद्ध करते हैं। विश्व के अन्य भागों की संस्कृतियां जब जन्म ले रही थीं तो उस समय भारतीय संस्कृति पूर्ण विकसित तथा पल्लवित हो चुकी थी। दूसरे देशों ने हमारी संस्कृति से ही शिक्षा प्राप्त की- आचार्य मनु ने कहा भी है कि-

**एतत्-देश-प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥** (मनुस्मृतिः 2.20)

इस देश भारत में उत्पन्न अग्रजन्मा ब्रह्मज्ञानियों से पृथिवी पर रहने वाले सभी प्राणी अपने-अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण करें।

**2. अद्भुत् समन्वय-शक्तिः-** भारत एक विशाल देश है। इसकी जनसंख्या 127 करोड है। यहाँ की जलवायु विविध प्रकार की है। यहाँ आर्य, द्रविड़, किरात, मुण्डा आदि अनेक जातियों के लोग रहते हैं। जिससे इसे जातियों का 'अजायबघर' कहा जाता है। हिन्दी, बंगाली, गुजराती, मराठी, पञ्जाबी आदि अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि अनेक धर्मों के लोग रहते हैं,

सबकी सभ्यता (रहन-सहन खान-पान, वेशभूषा) भिन्न होने के कारण कुछ विद्वानों ने इसे धर्मों, भाषाओं, विश्वासों, रीति-रिवाजों का संग्रहालय कहा है।

**3. अनेकतायाम् एकता-** अनेकता में एकता इसकी प्रमुख विशेषता है। यहाँ के लोगों में मूल, वंश, धर्म और भाषा की विविधता होते हुए भी आधारभूत एकता बनी रही । आर्यों, द्रविणों, शकों, हूडों आदि विभिन्न भाषा-भाषियों, विभिन्न धर्माऽनुयायियों, अहिंसावादियों, आस्तिकों, नास्तिकों आदि में विभिन्न दृष्टियों से महान अन्तर रहे तथापि आधारभूत एकता पाई जाती है ।

भारतीय संस्कृति सांस्कृतिक एकता और एकरूपता , सामाजिक तथा धार्मिक संस्कारों और उत्सवों में प्रकट होती है । इस प्रकार नाना भेदों, नाना संस्कृतियों के बावजूद अनेकता में एकता का सन्देश हमारी संस्कृति ही देती है। इसका उद्घोष है- **''वसुधैव कुटुम्बकम्''** पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है।

**4. अध्यात्मभावना-** मानव जीवन भोग के लिए नहीं अपितु आत्म उन्नति का प्रमुख साधन है। अतः भारतीय जन-जीवन का लक्ष्य मोक्षप्राप्ति, देवत्व प्राप्ति है। **फलतः अध्यात्म भावना भारतीय संस्कृति का प्राण है।**

**ईशावास्यम् इदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्**
**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥** (ईशावास्योपनिषद्.1)

इस संसार में जो कुछ जड़ जंगम है वह ईश्वर से व्याप्त है। तू त्याग भावना से उनका भोग कर, लालच न करो धन किसका हुआ है।

**आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति।**

वास्तविक द्रष्टा वही है, जो अपने समान सभी जीवों प्राणियों को देखता है।

**5. धर्म का आचरण-धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।**
**तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥**

धर्म का लोप करने वाले को धर्म ही मारता है, वही धर्म अपनाये जाने पर रक्षा करता है। अतः धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। (मनुस्मृतिः-)

**श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् ।**
**स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।** गीता

अपने आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म श्रेष्ठ है, अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है, क्योंकि दूसरे का धर्म भयावह होता है।

**धर्म क्या है- धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।**
**यः स्याद् धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः॥**

जिसे धारण किया जाय और जो सबको धारण करे, और जो उससे संयुक्त हो

उसे धर्म कहते है। (मनुस्मृतिः-)

**यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्म-** जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस् (इहलोक, परलोक) की सिद्धि हो उसे धर्म कहते हैं। (गीता)

**धर्मलक्षणम्- धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।**
**धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥**

आचार्य मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं, 1.धृतिः = धैर्य, 2.क्षमा, 3.दम= अहंकार, 4.अस्तेयं= चोरी न करना, 5.शौचः= पवित्रता, 6.इन्द्रियनिग्रहः= इन्द्रियों पर नियन्त्रण, 7.धीः= बुद्धि, 8.विद्या, 9.सत्य और 10. अक्रोधः= क्रोध न करना। (मनु. 6.92)

**6. परोपकारः- अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।**
**परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥**

अट्ठारह पुराणों में सार रूप में वेदव्यास जी ने दो वचन कहे, 1. पुण्य के लिए **परोपकार** और 2. पाप के लिए **दूसरों को दुःख देना।**

**7. त्यागभावना- यद्यपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।**
**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥**

लंका पर विजय पाने के बाद राम ने लक्ष्मण से कहा - हे लक्ष्मण! यद्यपि यह सोने की लंका फिर भी मुझे अच्छी नहीं लगती, क्योंकि माता, और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं।

**स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।**
**आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥**

स्नेह, दया, मित्रता को और यदि जनकल्याण के लिए मुझे जानकी को भी छोड़ने भी कोई दुःख नहीं होगा।

**8. सदाचारः- आचारः परमोधर्मः ।**

सज्जनों के आचार-विचार को धारण करना ही परम धर्म है।

**वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमेति च याति च।**
**अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः॥**

वृत्त = ब्रह्मचर्य की रक्षा यत्नपूर्वक करें क्योंकि वित्त = धन तो आता और जाता रहता है, धन न रहने से कोई अक्षीण = मरता नहीं, पर वृत्त के नष्ट होने से जीता हुआ भी मरा है।

**9. नारी शक्तिः- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वाःतत्राफलाः क्रियाः॥**

जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ समस्त देवता रमण करते हैं। जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ की सारी क्रियाएँ असफल हैं।

**मातृ देवो भव-** माता के देवता मानो- (तैत्तिरीयोपनिषद्-1.11.2)

**10. उदारता- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥**

सभी सुखी होवें, सभी निरोगी होंवे, सभी अच्छा देखें, कभी किसी को किसी प्रकार का दुःख न हो।

**11. वर्णव्यवस्था-** भारतीय संस्कृतेः समुन्नतौ प्रमुखसूत्रम् - वर्णव्यवस्था आसीत् । जन्मना- जातिः, कर्मणा-वर्णः निर्धारितो भवति। वर्णः श्रेष्ठः, जाति व्यवस्था दूषिता भवति। ब्राह्मण- क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र एते चत्वारो वर्णाः सन्ति।

**'चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।** (गीता- 4/13)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों को गुण और कर्म के अनुसार मेरे द्वारा मनाया गया है।

**12. आश्रमव्यवस्था-** भारतीय संस्कृतौ चत्वारः आश्रमाः सन्ति। ब्रह्मचर्यम् गृहस्थः, वानप्रस्थः, संन्यासः च।

■ ब्रह्मचर्याश्रमः- जन्मतः 25 वर्षं यावत् ।

कर्त्तव्यम् - विद्याध्ययनम्, स्वाध्यायः, सर्वविध-गुणसंग्रहः च।

■ गृहस्थाश्रमः- 25 वर्षतः 50 वर्षं यावत् ।

कर्त्तव्यम् - वैवाहिकजीवनयापनम्, वंशवृर्ध्यं सन्तानोत्पत्तिः, भौतिक-विषयाणामुपभोगः, सर्वविधममुन्नतिः च ।

■ वानप्रस्थाश्रमः - 50 तः 75 वर्षपर्यन्तम् ।

कर्तव्यम् - सपत्नीकः ईश्वराराधनम् , संयमः, योगः।

■ संन्यासाश्रमः- गृहस्थाश्रम-पश्चात् यदा वैराग्यभावना उत्पन्ना भवेत् ततः आरभ्य जीवनपर्यन्तम् ।

कर्तव्यम् - भौतिक-विषयाणां त्यागः, योगाभ्यासे रतिः, पुण्यार्जने प्रवृत्तिः, समाधिः, मोक्षप्राप्त्युपायः, योगः।

जीवन को मनोवैज्ञानिक आधार पर चार आश्रमों में विभाजित किया गया था। हमारी संस्कृति में 100 वर्ष पर्यन्त आयु की प्रार्थना की गई है । आज भी लोग जीते हैं। दीर्घायु का मूलमन्त्र ब्रह्मचर्याश्रम है।

**13. कर्मवादः,पुनर्जन्मवादः- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।** गीता-2.47

तुम्हारा केवल कर्म करने में अधिकार है। न कि उसके फल प्राप्ति में।

**त्रिभिवर्षैः त्रिभिर्मासैः त्रिभिर्पक्षैः त्रिभिर्दिनैः।**

**अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाऽशुभम्॥** (गरुणपुराण-)

व्यक्ति जैसा भी शुभ-अशुभ कर्म करता है उसका फल तीन वर्ष, तीन माह, तीन पक्ष व तीन दिन में अवश्य प्राप्त करता है।

**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च।** (गीता-2/27)

जो जन्म लिया मृत्यु भी उसकी सुनिश्चित है, पुनश्च कर्म के अनुसार पुनर्जन्म भी सुनिश्चित है।

**14. अहिंसा परमो धर्मः-** भारतीय-संस्कृति अहिंसा-दया, प्रेम-शान्ति, उदारता आदि भावनाओं से परिपूर्ण है। सम्राट् अशोक, महात्माबुद्ध, स्वामी महावीर, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों का यह मार्ग है।

**15. यज्ञसम्पादनम् -** भारतीय संस्कृति में मानवजीवन पर्यन्त पाँच यज्ञ बताये गये हैं। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथि-यज्ञ।

*1. ब्रह्मयज्ञः- सन्ध्यावन्दनम् (प्राणायामः, सूर्यनमस्कारः, जपादिकम् च)।*
*2. देवयज्ञः- दैनिक-होमः।*
*3. पितृयज्ञः- मातृपितृ-सेवा, आज्ञापालनं च।*
*4. बलिवैश्यदेवयज्ञः- प्रतिदिनं भोजनात् पूर्वं अग्निः, गौः, श्वान् , कीटादिभ्यः अन्नप्रदानम्।*
*5. अतिथियज्ञः- **अतिथि देवो भव** (अतिथि को देवता मानो) अतः सेवा, शुश्रूषा, सत्कारादीनाम् आचरणं पालनं च अवश्यमेव करणीयम्।*

इस प्रकार ग्रहणशीलता, दार्शनिकता, मनोवैज्ञानिकता, व्यापकता, तपोमय जीवन, मातृ-पितृ भक्ति, गुरु-राष्ट्रभक्ति, पुरुषार्थ-चतुष्टय आदि विशेषताएँ हैं। इन सभी विशेषताओं का संस्कृत वाङ्मय प्रतिपादन करता है तथा शिक्षा प्रदान करता है। इसलिए कहा गया है-

**''संस्कृतिः संस्कृताश्रिता वर्तते।''** संस्कृति संस्कृत के आश्रित है।

**''भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे - संस्कृतं सांस्कृतिस्तथा''।** इति।।

संस्कृत और संस्कृति ये दोनों भारत की प्रतिष्ठा हैं।

**संस्कृतम् नाम दैवीवाकग् अन्वाख्याताः महर्षिभिः**

संस्कृत देववाणी है ऐसा महर्षियों ने कहा है।

**समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।**

**समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥**

तुम्हारे अभिप्रायों, हृदयों तथा मनों में समता की भावना रहनी चाहिए। जिससे तुम्हारी समूह की सामुदायिक शक्ति का विकास हो।

# संस्काराणां पावन-परम्परा

**संस्कारशब्दस्य व्युत्पत्तिः-**

सम् उपसर्गकः, कृञ् धातुः, घञ् प्रत्ययः, सुडागमश्च।

(सम् + सुट् + कृ + घञ् = संस्कारः) शुद्धि, स्वच्छता, परिमार्जितम् इति शब्दार्थः । अर्थः- मानव जीवन को पवित्र, सुन्दर तथा उन्नत बनाने के लिए धार्मिक कृत्यों को संस्कार कहते हैं।)

संस्कार को अंग्रेजी के Ceremony (सिरीमनी) और लैटिन के Caerimonia (सिरीमोनिया) के रूप में जाना जाता है। जिसका अर्थ कर्म अथवा धार्मिक क्रियाएँ है। कुछ लोग अंग्रेजी के सेक्रामेण्ट को संस्कार का उपयुक्त पर्याय मानते हैं- जिसका अर्थ- धार्मिक विधि-विधान जो आन्तरिक तथा आत्मिक सौन्दर्य का बाह्य तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है।

**अभिप्रायः-** संस्कार- जीवन शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान हैं, जिनसे सुसंस्कृत व्यक्ति समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।

**प्रयोजनम् /उद्देश्यम् -**

- संस्कार किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अङ्ग हैं।
- संस्कारों का जन्म मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए है।
- संस्कार भारतीय समाज के आदर्शों तथा महत्वकांक्षाओं को हस्तान्तरित करने के साधन हैं।
- संस्कारों से व्यक्तित्व के विकास द्वारा मनुष्य का कल्याण और समाज तथा विश्व से उसका सामञ्जस्य स्थापित होता है।
- संस्कार मानव जीवन तथा उसके विकास की क्रमबद्ध योजना है।
- व्यक्तित्व विकास को सुविधा जनक करना।
- मानव देह को पवित्र तथा महत्व प्रदान करना।
- मनुष्य की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक महत्वकांक्षाओं को गति प्रदान करना।

इस प्रकार मनुष्य का जीवन संस्कारों से ही परिशुद्ध होता है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन संस्कारों से आवृत्त रहा है, जो यथा समय कार्यान्वित किए जाते रहे। ये संस्कार अत्यन्त प्राचीन समय से हमारे पारिवारिक जीवन की आधारशिला रहे हैं। जन्म से पूर्व गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त 16 संस्कारों का विधान हमारे शास्त्रों में किया गया है।

**1. गर्भाधानम् - 'गर्भः सन्धार्यते येन कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'**
जिस कर्म के द्वारा पति-पत्नी में सन्तानोत्पत्ति हेतु संस्कार करता है उसे गर्भाधान संस्कार कहते हैं।

**2. पुंसवनम् - 'पुमान् प्रसूयेत येन कर्मणा तत् पुंसवनम्।**
जिस कर्म के द्वारा पुरुष का जन्म हो उसे पुंसवन संस्कार कहते हैं। (गर्भ के तीसरे माह में किया जाता है)।

**3. सीमन्तोन्नयनम् - 'सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनम्'।**
जिस कर्म में गर्भिणी स्त्री के केशों का शृंगार हो (ऊपर उठाना) उसे सीमन्तोन्नयन कहते हैं। यह गर्भ से छठें या 8वें माह में सम्पन्न होता है।

**4. जातकर्म-** बालक के जन्मोपरान्त उसकी रक्षा व दीर्घायु हेतु यह संस्कार किया जाता है।

**5. नामकरणम् - 'नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।**
**नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यः ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म।**

नाम अखिल व्यवहार का हेतु है, वह शुभावह कर्मों में भाग्य का हेतु है। नाम से ही मनुष्य कीर्ति प्राप्त करता है, अतः नाम करण अत्यन्त प्रशस्त है।

-बालकों का नाम 2-4 आदि सम अक्षरों की संख्या होनी चाहिए।

-लड़कियों का नाम सुखकर, स्पष्ट व मंगलसूचक होना चाहिए।

इनके नामाक्षरों के लिए विषम संख्या बताई गई है। अतः 'द्वयक्षरं प्रतिष्ठाकामः चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामः। अर्थात् प्रतिष्ठा अथवा कीर्ति के लिए द्वयक्षर तथा ब्रह्मवर्चस कामना हेतु चार अक्षरों का नाम रखना चाहिए।

- जन्मनक्षत्र आधारित नाम, मासदेवता आधारित नाम, कुलदेवता सूचकं नाम, लौकिक नाम ये चार प्रकार के नाम रखने चाहिए।

- नामकरण जन्म से 10वें या 12हवें दिन सम्पन्न होना चाहिए।

**6. निष्क्रमणम् -** जन्म के तीन माह बाद जब शिशु बाह्य जलवायु का सहन करने योग्य हो जाता है तब उसे घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते है।
इसमें सूर्य देवता से बालक के स्वास्थ्य एवं दृष्टि-शक्ति को पूर्ण बनाए रखने की प्रार्थना की जाती है।

**7. अन्न-प्राशनम् -** (शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु) जन्म के छः माह बाद दाँत निकलते समय बच्चे को अन्न खिलाने का प्रारम्भ इस संस्कार में किया जाता है। इसमें दही, शहद, घृत, पायस, आदि सुस्वादु भोजन कराया जाता है।

**8. चूड़ाकरणम् -** (चौलकर्म) शिखा रखने का संस्कार पौष्टिकता, बल, आयु,

पवित्रता और सौन्दर्य की प्राप्ति हेतु जन्म के प्रथम व तीसरें वर्ष की समाप्ति के पूर्व सम्पन्न करना चाहिए। इसे **मुंडन संस्कार** भी कहते है। शिखा रखना इसका प्रमुख अङ्ग है।

**9. कर्णवेधः** - तीसरे व पाँचवें वर्ष में किसी अनुभवी वैद्य या सुनार द्वारा स्वर्ण सूची से इस संस्कार को सम्पन्न कराना चाहिए। 'सुश्रुत' के अनुसार अण्डकोशवृद्धि, अन्त्रवृद्धि आदि। रोगों से रक्षा, भूषण तथा अलंकरण के निमित्त जातक का कर्णछेदन करना चाहिए।

**10. विद्यारम्भः** - इसे अक्षरारम्भ (अक्षरलेखन) संस्कार भी कहते हैं। यह संस्कार जब बालक का मस्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो जाता था, तब शिक्षा का आरम्भ ही विद्यारम्भ संस्कार है। इसे अक्षरारम्भ, अक्षरलेखन आदि भी कहते हैं।

**11. उपनयनम्** - (गुरोः समीपे नयनम् - गुरु के समीप ले जाना) शिक्षा से सम्बन्धित यह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। इसे वर्णानुसार 5 वर्ष से 14 वर्ष के अन्दर सम्पन्न करने का विधान है। इसके बाद बालक 'द्विज' कहलाता है। इसके बाद ही 'गायत्रीमन्त्र' का अधिकारी तथा वेद शिक्षा का अधिकारी होता है। यह बालक का दूसरा जन्म कहलाता है।

**वेदारम्भः- ( वेदशिक्षायाः आरम्भः )** इस संस्कार के द्वारा बालक चारों वेदों एवं षड़ङ्गों के साङ्गोपाङ्ग अध्ययन हेतु नियम धारण करता है। प्रायः उपनयन के साथ ही इसे किया जाता है। (इस संस्कार को उपनयन के साथ करने की परम्परा रही है।)

**12. समावर्तनम् - ( दीक्षान्त समारोहः )** तत्र समावर्तनं नाम वेदाध्ययनानन्तरं गुरुकुलात् स्वगृह-गमनम् । गुरुकुल में शिक्षा पूर्ण होने पर घर जाने की अनुमति इस संस्कार के बाद ही दी जाती थी। इसके बाद ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश होता था। आजकल शिक्षण संस्थाओं में इसे 'दीक्षान्त समारोह' कहा जाता है।

- गृह्यसूत्र में तीन प्रकार के स्नातकों का वर्णन मिलता है-

**1. व्रत-स्नातकः** - जो ब्रह्मचर्याश्रम पूर्ण कर ले पर विद्या पूर्ण न हो।

**2. विद्या-स्नातकः** - जो सम्पूर्ण विद्या तो जाने पर उसका ब्रह्मचर्य खण्डित व अपूर्ण हो।

**3. उभय-स्नातकः** - जो सम्पूर्ण व्रत तथा विद्या प्राप्त कर चुके हो।

**14. विवाहः/पाणिग्रहणम् ( गृहस्थाश्रमे प्रवेशः )**- स्मृतियों में आठ प्रकार के विवाह (अष्टविध विवाह) का उल्लेख है-

**ब्राह्मो दैवः तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।**
**गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ या.ब.1-58**

**1. ब्राह्म विवाह-** विवाह का यह सर्वोत्तम प्रकार है। इसमें माता-पिता कन्या

के लिए सुयोग्य वर का चयन कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा के साथ वस्त्राभूषणों से सज्जित कर कन्या का दान करते हैं।

- वर्तमान समय में भी ब्राह्मविवाह ही सर्वाधिक प्रचलित एवं सर्वोपरि है।

- दान दक्षिणा- अलंकार ने दहेज रूपी कुप्रथा का रूप ले लिया है।

**2. दैव विवाह-** यज्ञ में आहूत ऋत्विजों में श्रेष्ठ पुरोहित को दक्षिणा रूप में पिता कन्य का दान करता था। अतः देव कार्य हेतु दान देने के कारण इसे देव विवाह कहा जाता है।

**3. आर्ष विवाह-** इस तृतीय प्रकार में कन्या का पिता वर पक्ष को यज्ञादि धर्म विहित कार्य को सम्पन्न करने के लिए दो गाय के जोड़ों को लेता था।

-ऋग्वेद के अनुसार जब विस्तृत ज्ञान तथा आध्यात्मिक योग्यता के कारण किसी ऋषि के साथ कन्या विवाह **आर्ष विवाह** कहलाता था।

**4. प्राजापत्य** - समान योग्यता वाले वर कन्या का विवाह जब प्रजापति के प्रति अपना ऋण चुकाने के उद्देश्य से किया जाता था तो इसे 'प्राजापत्य विवाह' कहते थे।

**5. असुर-** जिस विवाह में धन ही निर्णायक तत्व हो। जिस विवाह में कन्या के माता-पिता व सम्बन्धियों को धन देकर कन्या प्राप्त की जाय उसे असुर विवाह कहते हैं।

**6. गान्धर्व-** (प्रेम विवाह) जिस विवाह में वर-कन्या कामुकता ऐश्वर्य आदि के वशीभूत होकर पारस्परिक सम्मति से विवाह करते हैं उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं।

**7. राक्षस-** वर जब कन्या पक्ष पर बल प्रभाव से कन्या प्राप्त कर विवाह करता है, तो उसे राक्षस विवाह कहते हैं।

**8. पैशाच-** जब छल-कपट के द्वारा कन्या से विवाह करे उसे पैशाच विवाह कहते हैं। जो अष्टविध विवाह में सबसे निकृष्ट माना गया है।

**15. वानप्रस्थाश्रम-** जीवन की तीसरी अवस्था में यह संस्कार होता है।

**15. संन्यासाश्रम-** यह संस्कार जीवन के चतुर्थ अवस्था में होता है, अर्थात् जब वैराग्य उत्पन्न हो जाय, विश्वकल्याणार्थ इसे सम्पन्न कराया जाता है।

**16. अन्त्येष्टि-** भारतीय जीवन परम्परा का यह अन्तिम संस्कार है। इसे मृत्यु पश्चात् सर्वविध शान्ति के लिए किया जाता है। इससे पितरों की प्रसन्नता तथा अपना अभ्युदय होता है।

आरम्भिक 15 संस्कार जीवन पर्यन्त इस लोक में यश और कीर्तिप्रद होते हैं तथा 16वां संस्कार परलोक को सुखद करता है।

**( सोलहों संस्कार मनुस्मृति, आश्वलायन गृह्यसूत्र, वीरमित्रोदय, संस्कार प्रकाश के अनुसार बताए गए हैं। )**

# संस्कृतम्

सम् उपसर्गकः कृञ् धातुः क्त प्रत्ययः सुट् आगमः प्रथमा-विभक्ति-एकवचने संस्कृतम् (सम् + सुट् + कृ + क्त + सु = संस्कृतम् ) ।

**संस्कृतशब्दार्थः-** परिष्कृतं, शुद्धम् , व्याकरणादि-दोषरहितम् ।

**संस्कृतस्य अपरं नाम** - अमरवाणी, देववाणी, सुरभारती, दैवीवाक्, गीर्वाणवाणी, ।

**संस्कृत भाषायाः विशेषताः -**

- देवसंस्कृतेः (भारतीयसंस्कृतेः) संरक्षिका।
- देव-ऋषि-मुनीनाम् ज्ञानोपदेश-साधिका ।
- भारतीय-वैभव-ज्ञानविज्ञान-बोधिका ।
- सम्पूर्ण-समाजस्य सर्वविध-हितकारिणी।
- कर्त्तव्य-अकर्तव्य बोधिनी।
- इहलोक-परलोकहित-सम्पादिका।
- विश्वगुरुता-समरसता-एकतादि साधिका।

**धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।**
**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥** (महा. आदि 62-53)

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चतुर्विध पुरूषार्थों से सम्बन्धित जो भी ज्ञान विज्ञान यहाँ है वही अन्यत्र है। जो यहाँ नहीं है, वह कहीं और भी नहीं।

## संस्कृतस्य विशालता (वेदोऽखिलोधर्ममूलम्)

### वेदस्वरूप-बोधकचक्रम्

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **चत्वारः वेदाः** | ऋग्वेदः | यजुर्वेदः | सामवेदः | अथर्ववेदः |
| **चत्वारः उपवेदाः** | आयुर्वेदः | धनुर्वेदः | गान्धर्ववेदः | स्थापत्यवेदः |
| **चत्वारः ऋत्विजः** | होता | अध्वर्युः | उद्गाता | ब्रह्मा |
| **चत्वारः देवताः** | अग्निः | वायुः | सूर्यः | सोमः |
| **चत्वारः ऋषयः** | पैलः | वैशम्पायनः | जैमिनिः | अथर्वा, सुमन्तुः |
| **चत्वारः उपनिषदः** | ऐतरेयः | ईशः, कठः, बृहदारण्यकः | प्रश्नः, मुण्डकः | छान्दोग्यः, केनः माण्डूक्यः |
| **ब्राह्मण-ग्रन्थाः** | ऐतरेयः | **शतपथ ब्राह्मण** | **पंचविंशः, षड्विंशः** | गोपथः |

**वेदानां सामान्यः परिचयः**

1. वेदः- 'विद्' ज्ञाने धातोः रूपम् अस्ति- वेदः।

**वेदशब्दार्थ-** ज्ञानम् (ज्ञानराशिः) "वेदो नाम वेद्यन्ते=ज्ञाप्यन्ते धर्म-अर्थ-काम-

मोक्षाः अनेन इति। अर्थात् धर्म,अर्थ,काम, और मोक्ष विषयक सम्यक ज्ञान प्राप्ति के लिए साधनभूत ग्रन्थ विशेष को वेद कहते हैं ।

***वेदभागाः-** मन्त्र-ब्राह्मण-उपनिषद् च।

***मन्त्रः-** चिन्तन-मननपूर्वकं देवतानां स्तुतिः - मन्त्रः कथ्यते।

***ब्राह्मणम्** - अत्र विविध-कामना-परक-कार्याणां सिध्यथर्म् उपायाः सन्ति।

***उपनिषद्** - अध्यात्मविषयकं महत्वपूर्ण विवेचनम् ।

***ऋत्विज्** - यज्ञकर्त्ता

***होता** - यः यज्ञकर्त्ता देव-प्रशंसापरक मन्त्रद्वारा देवातानाम् आवाहनं करोति सः होता।

***अध्वर्युः** - यः यज्ञविषयकं सम्पूर्णकर्माणि विधिपूर्वकं सम्पादयति सः अध्वर्युः।

***उद्गाता** - यः सस्वर-मन्त्रगानं करोति सः उद्गाता।

***ब्रह्मा** - यः सम्यक्रूपेण समग्रं यज्ञकर्म निरीक्षते सः ब्रह्मा।

## ऋग्वेदः

***ऋग्वेदे छन्दोबद्ध-** ऋचानां (मन्त्राणाम्) संग्रहः अस्ति ।

***ऋग्वेदे मण्डलानां संख्या अस्ति-**दश

***ऋग्वेदे मन्त्राः सन्ति** - 10580

***ऋग्वेदे अस्ति** - इन्द्र-अग्नि-मित्र-वरुण-सविता-रुद्र-बृहस्पति आदि देवानां स्तुतिः।

***ऋग्वेदः अस्ति-** ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-मूल्यानां स्रोतः।

## यजुर्वेदः

***यजुर्वेदे गद्यात्मक-** मन्त्रसंग्रहः अस्ति।

***गद्य-पद्यात्मकः वेदः अस्ति-** यजुर्वेदः

***यजुर्वेदस्य भागद्वयम् अस्ति-** शुक्ल यजुर्वेदः, कृष्णयजुर्वेदः

***संहिता-** माध्यन्दिनी काण्वः

***अध्यायः-** 40(चत्वारिंशत्)

***यजुर्वेदस्य प्रतिपाद्य-विषयः-** कर्मकाण्डः

## सामवेदः

सामवेदस्य महत्ता भगवान् श्रीकृष्णः श्रीमद्भागवद्गीतायाम् उवाच-

**'वेदानां सामवेदोऽस्मि'**-वेदों में मैं सामवेद हूँ।

**गानप्रधानं वेदः** - सामवेदः

1000 सहस्र शाखा सन्ति अतः 'सहस्रवर्त्मा' कथ्यते।

**सङ्गीत-आधारभूताः प्रमुखाः स्वराः-** सप्तस्वराः

**सामवेदस्य मुख्यतया प्रतिपद्यविषयः-** संगीतम्

**सामगानं पञ्चधा भवति-** प्रस्तावः, उद्गीथः, प्रतिहारः, उपद्रवः, निधनञ्च।

## अथर्ववेदः

**अथर्ववेदस्य अन्य नामानि-** अथर्वाङ्गिरोवेदः, ब्रह्मवेदः, भिषग्वेदः, क्षत्रवेदः, छन्दोवेदः।

**प्रतिपाद्यविषयाः-** ब्रह्मविषयकदार्शनिक-सिद्धान्ताः, राजनीति-प्रायश्चित-भैषज्य-कर्मशान्तिक-पौष्टिककर्म-आयुष्यकर्म-अभिचार कर्म, कृषिकर्म अथवा जल-सूर्यकिरण- मानसिक-चिकित्सा आदि।

# वेदाङ्गानि

वेदः = ज्ञानम्, अङ्गम् = स्वरूपबोधनम् (जो स्वरूप का बोध कराने में उपयोगी हों)

**वेदाङ्गानि सन्ति-** षट्

शिक्षा, कल्पः, व्याकरणं, निरूक्तं, छन्दः, ज्योतिषम् । वेदरूपी भगवतः शरीरस्य एतानि षट् अङ्गानि सन्ति ।

1. छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ कथ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुः, निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा-घ्रांण तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव, ब्रह्मलोके महीयते।।

वेदाङ्ग वेदरूपी पुरुष के छः अङ्ग हैं- छन्द- पैर, कल्प- दोनों हाथ, ज्योतिष- नेत्र, निरुक्त- कान, शिक्षा- नासिका और व्याकरण को मुख बताया है, जिनके अध्ययन से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

**वेदाङ्गपरिचयः**

**1. शिक्षा- 'स्वरवर्णादि उच्चारण-प्रकारः यत्र शिक्ष्यते सा शिक्षा'**। जहाँ स्वर-वर्णादिकों के उच्चारण विधियों का ज्ञान किया जाता है उसे शिक्षा कहते हैं।

**शिक्षाग्रन्थाः** - याज्ञवल्क्य-शिक्षा, पाणिनीय-शिक्षा, नारदीय-शिक्षा, कात्यायनी- शिक्षा, पाराशरी-शिक्षा आदि।

**2. कल्पः- 'वेदविहितानां कर्मणाम् आनुपूर्वेण कल्पनाशास्त्रम् कल्पः'**। वेद प्रतिपादित कर्मों को क्रमपूर्वक व्यवस्थित करने वाले शास्त्र को 'कल्पसूत्र' कहते हैं।

**कल्पसूत्रग्रन्थाः**-श्रौतसूत्रम् - विविध प्रकार की अग्नि का वर्णन।

गृह्यसूत्रम् - संस्कारों का निरूपण।

धर्मसूत्रम् - वर्ण-आश्रम-धर्म-आचार आदि का वर्णन।

शुल्बसूत्रम् - ज्यामितीय प्रक्रिया व अन्य गणितीय प्रक्रिया का निरूपण।

**3. व्याकरण- 'व्याक्रियन्ते = व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन इति व्याकरणम्'** । जिससे पद, प्रकृति-प्रत्यय का विवेचन पूर्वक उनके अर्थ का ज्ञान हो उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण का उद्भव भगवान् ब्रह्मा से माना जाता है। व्याकरण शास्त्र के प्रथम वक्ता ब्रह्मा, द्वितीय देवगुरु बृहस्पति, संस्कर्त्ता- देवराज इन्द्र को माना जाता है। महर्षि पाणिनि से पूर्व एवं पश्चात् के कुल 85 प्राचीन व्याकरणाचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

यद्यपि ऐन्द्र, चान्द्र आदि आठ व्याकरण ग्रन्थ पाणिनीय व्याकरण से पूर्ववर्ती है, तथापि अधिक लोकप्रिय एवं सर्वाङ्गपूर्ण होने के कारण पाणिनीय व्याकरण ही व्याकरण का प्रतिनिधि ग्रन्थ माना जाता है। **ग्रन्थः-अष्टाध्यायी, रचयिता- महर्षिःपाणिनिः।**

**4. निरुक्तम् - 'अर्थावबोधे निरपेक्षता पदजातं यत्रोक्तं तन्निरुक्तम्'** । अर्थ ज्ञान में बिना किसी उपेक्ष से पदों की व्युत्पत्ति जहाँ कही गई है उसे निरुक्त कहते हैं। इसे वेद का कोषग्रन्थ भी कहा जाता है। **निरूक्त प्रणेता आचार्य यास्कः** है।

**5. छन्दःशास्त्रम् -** वेद छन्दोमय हैं, अतः वेदमन्त्रों के उच्चारण के लिए छन्दः शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। **छन्दः सूत्रम् , रचयिता - आचार्य पिङ्गलः**

**6. ज्यौतिषम् -** (प्रत्यक्षशास्त्रम् ) **'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ'।** ज्योतिष शास्त्र प्रत्यक्ष है, चन्द्र और सूर्य इसके साक्षी है।

यज्ञ यागादि के लिए समुचित समय निरूपक शास्त्र को ज्योतिष कहते हैं। **ज्योतिषशास्त्रप्रणेता- आचार्यःलगधमुनिः।**

## उपनिषदः

**ईश-केन कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।**
**ऐतरेयं छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥**

**ईशावास्योपनिषद्**, केनोपनिषद् , कठोपनिषद् , प्रश्नोपनिषद् , मुण्डकोपनिषद् , **तैत्तिरीयोपनिषद्** , ऐतरेयोपनिषद् , छान्दोग्योपनिषद् , बृहदारण्यकोपनिषद् , माण्डूक्योपनिषद्

**श्रीशंकराचार्य** ने इन दस उपनिषदों को गिनाया है। वेद के अन्तिम भाग होने के **कारण** उपनिषद को वेदान्त भी कहते हैं।

**महावाक्यानि-**

**अहं ब्रह्मास्मि** - मैं ब्रह्म हूँ। छान्दो. 1/4/10

**अयमात्मब्रह्म**- यह आत्मा ब्रह्म है। बृहदा. 2/5/19

**ॐकार एवेदं सर्वम्** - यह सब कुछ ॐकार ही है। छान्दो. 2/23/3

**तत्त्वमसि**- तुम वही हो ( अर्थात् जीवात्मा ब्रह्म ही है) छान्दो. 6/8/7

**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**- निश्चित रूप से यह सब कुछ ब्रह्म ही है। छान्दो. 3/14/11

## दीर्घायु प्रदायकः त्र्यम्बकमन्त्रः

**ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।**
**उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥**

हम लोग उस भगवान शिव की उपासना करते हैं, वे हमारे जीवन में सुगन्धि (यश, सदाशयता) एवं पुष्टि (शक्ति, समर्थता) का प्रत्यक्ष बोध कराने वाले हैं। जिस प्रकार पका हुआ फल ककड़ी, खरबूजा आदि स्वयं डंठल से अलग हो जाता हैं, उसी प्रकार हम मृत्युभय से सहज मुक्त हों किन्तु अमृतत्व से दूर न हों।

## चातुर्वेद-पन्थानमनुचरेम

(चारों वेदों के मार्गका हम अनुसरण करें)

**एको विश्वस्य भुवनस्य राजा-** सम्पूर्ण विश्व का एक मात्र स्वामी है। ऋग्वेदः-6/36/4

**सं गच्छध्वं सं वदध्वम्-** मिलकर चलो और मिलकर बोलो। ऋग्वेदः-10/19/12

**स्वस्ति पन्थामनु चरेम-** हम कल्याण-मार्ग के पथिक हों। ऋग्वेदः-5/51/15

**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामेह-** हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। यजुर्वेदः-36/18

**भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम-** हम कानों से मंगलकारी वचन ही सुनें। यजुर्वेदः-25/21

**वयं स्याम सुमतौ-** हमें सद्बुद्धि प्रदान करो। यजुर्वेदः-11/21

**विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्-** इस गांव में सभी लोग रोग रहित और हृष्ट-पुष्ट हों। यजुर्वेदः-16/48

**मा गृधः कस्य स्विद्धनम्-** पराये धन का लालच न करो। यजुर्वेदः-40/01

**यज्ञस्य ज्योतिः प्रियं मधु पवते-** यज्ञ की ज्योति प्रिय और मधुर भाव उत्पन्न करती है। सामवेदः-1031

**सं श्रुतेन गमेमहि-** हम वेदोपदेश से युक्त हों। अथर्ववेदः-01/01/04

**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युम् आघ्नत-** ब्रह्मचर्य रूपी तपोबल से ही विद्वानों ने मृत्यु को जीता है। अथर्ववेदः-11/05/19

**मधुमतीं वाचम् उदेयम्-** मैं मीठी वाणी बोलूँ। अथर्ववेदः-16/02/02

**सर्वमेव शमस्तु नः-** हमारे लिए सब कुछ कल्याणकारी हो। अथर्ववेदः-19/09/14

## संस्करोति संस्कृतभाषा

संस्कृतभाषायाः इदं महत्वमेव यत् भारतस्य विशिष्टासु संस्थासु, समितिषु, संघेषु व प्रेरकानि आदर्शवाक्यानि संस्कृतभाषायामेव सन्ति। तद्यथा-

| | |
|---|---|
| सत्यमेव जयते | भारत-सर्वकारः |
| धर्मचक्र-प्रवर्तनाय | लोकसभा |
| यतोधर्मः ततो जयः | सर्वोच्च-न्यायालयः |
| भारतीय थल सेना | सेवा अस्माकं धर्मः |
| नभः स्पृशं दीप्तम् | भारतीय वायुसेना |
| शं नो वरुणः | भारतीय नौ सेना |
| ह्वयामि भर्गः सवितुर्वरेण्यम् | ,, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी |

## आदिकाव्यम् रामायणम्

'रामायण' महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित लौकिक संस्कृत साहित्य का आदि महाकाव्य है। आदि माने पहला। अतः महर्षि बाल्मीकि को आदि कवि कहा जाता है। क्योंकि लौकिक संस्कृत की छन्दोमयी वाणी में सबसे पहले काव्य उन्होंने ही लिखा था। इस महाकाव्य में रामकथा वर्णित है। जिस कथा को सर्वप्रथम महर्षि बाल्मीकि ने रघुकुलभूषण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव और कुश को सुनाया तथा पढ़ाया था। उन पुत्रों ने वीणा के स्वरों में इसका गान किया और अयोध्या नरेश श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर राजा सहित सभी प्रजा जनों को सुनाया।

रामायण नामक महाकाव्य में कुल 24 हजार श्लोक हैं। इसे 'चतुर्विंशति साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। 24 हजार श्लोक सप्त काण्डों में विभाजित हैं। वे काण्ड हैं- क्रमशः- बालकाण्डः, अयोध्याकाण्डः, अरण्यकाण्डः, किष्किन्धाकाण्डः, सुन्दरकाण्डः, युद्धकाण्डः, (लंकाकाण्डः) उत्तरकाण्डः।

### लौकिकसंस्कृतसाहित्य का प्रथम श्लोक

एक बार आदि कवि महामुनि बाल्मीकि ने प्रातःकाल तमसा नदी के तट पर क्रौञ्चपक्षी के एक जोड़े को खेलते हुए देखा। तभी सहसा एक व्याध ने बाण से नर पक्षी को मार दिया। मादा असहाय बेवस हो करुण क्रन्दन करने लगी। निरीह, निर्दोष उस पक्षी की पीड़ा से बाल्मीकि मुनि का गला भर आया, और करुणा से पूरित कण्ठ से छन्दोमयी वाणी निःश्रित हो पड़ी-

**मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।**
**यत् क्रौञ्च मिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम् ॥**

हे व्याध! (बहेलिये) तुमने काममोहित युगल क्रौञ्च पक्षी में से एक को मारा अतः तुम दीर्घकाल तक प्रतिष्ठा को मत प्राप्त हो। (बा.रा. बा.का.- 2/15)

विश्व को कवितामयी भाषा का यह प्रथम वरदान था। जिसे ब्रह्माजी सुनकर अवाक रह गए। उसी समय महामुनि के पास आकर बोले-

"हे महामुनि! वाणी आपके वश में हो गई है। शब्द आप को सिद्ध हो गये हैं। आपकी तपस्या धन्य है। आपने तीनों लोकों का हित किया है। अब आप इस छन्दोमयी वाणी में इक्ष्वाकुवंश के प्रतापी राजा दशरथ के पुत्र राम की कथा कहें। जगत् में आदि कवि के नाम से आप की प्रसिद्धि होगी"।

इस प्रकार एक पक्षी की शोक से सन्तप्त, मन लोकहित में रामकथा 'रामायण' की रचना में कारण बना। जो धर्म, प्रेम, भक्ति, मर्यादा, सम्बन्ध, साहित्य, कला, संस्कृति और इतिहास का साक्षात् विग्रह है।

# महाभारतम्

'महाभारत' नामक महाकाव्य को महर्षि वेदव्यास ने देवभूमि उत्तराखण्ड के बदरिकाश्रम में लिखा। अतः उन्हें महर्षि बादरायण भी कहा जाता है। महाभारत में एक लाख श्लोक है। अतः इसे 'शत-साहस्री संहिता' भी कहा जाता है। 18 पर्वों में विभक्त इस महाकाव्य में कौरव-पाण्डवों की उत्पत्ति से लेकर पाण्डवों की स्वर्ग प्राप्ति पर्यन्त वर्णन है। यह विश्व का एक विशाल ऐतिहासिक महाकाव्य है।

**नामकरण-**

**जयसंहिता**- सर्वप्रथम कौरवों पर पाण्डवों की विजय गाथा लिखी गयी जिसका नाम 'जय संहिता' था। महर्षि वेदव्यास इसके वक्ता तथा भगवान गणेश को लेखक माना जाता है। जिसमें 88000 श्लोक थे। इसे महर्षि वेदव्यास के शिष्य वैशम्पायन ऋषि ने राजा परीक्षित पुत्र जनमेजय के सर्पयज्ञ में प्रथम बार सुनाया था ।

**महाभारत**- जय संहिता को दूसरी बार नैमिषारण्य में शौनक ऋषि के यज्ञ में श्री सूत जी (लोमहर्षणपुत्र उग्रश्रवा) ने सुनाई थी। 12 वर्षों तक चले महायज्ञ में भरतवंश की भी कथा थी। इसमें विभिन्न आख्यान, उपाख्यान प्रश्नोत्तर, शंकासमाधान होने के कारण इसका नाम महाभारत पड़ा। (सूत-शौनक-सौति आदि ने भी सुनाया है।)

## अष्टादश पर्वाणि

| | | |
|---|---|---|
| 1. आदिपर्व | 2. सभापर्व | 3. वनपर्व |
| 4. विराटपर्व | 5. उद्योग पर्व | 6. भीष्म पर्व |
| 7. द्रोणपर्व | 8. कर्णपर्व | 9. शल्यपर्व |
| 10. सौसुप्ति | 11. स्त्री पर्व | 12. शान्तिपर्व |
| 13. अनुशासनिक पर्व | 14. अश्वमेध पर्व | 15. आश्रम पर्व |
| 16. मुसल पर्व | 17. महाप्रस्थानिक पर्व | 18. स्वर्गारोहण पर्व |

## विशिष्ट उपाख्यानानि

**नलोपाख्यानम्** - नल-दमयन्ती विषयकं वर्णनम्
**शकुन्तलोपाख्यानम्** - दुष्यन्त-शकुन्तलाविषयकं वर्णनम्
**परीक्षितोपाख्यानम्** - राजा परीक्षितवर्णनम्
**दुर्वासोपाख्यानम्** - दुर्वासा द्वारा शापादि वर्णनम्

रामायण एवं महाभारत बाद के कालिदास, भवभूति, तुलसीदास आदि कवियों की कविता के आधार रहे । **कालिदास**- अभिज्ञान शाकुन्तलम् , **श्रीहर्ष**- नैषधीयचरितम्, **भारवि**- किरातार्जुनीयम् आदि की रचना की।

# श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। जिसमें भीष्मपर्व के 23 अध्याय से लेकर 40वें तक कुल 18 अध्याय सम्मिलित हैं। गीता सम्पूर्ण मानव जीवन की झांकी प्रस्तुत करती है अतः इसे हिन्दू धर्म ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया गया है।

गीता में अट्ठारह अध्याय हैं जिसे '**अष्टदशाध्यायी**' भी कहते हैं। इसमें कुल 700 श्लोक हैं। 18 दिनों तक चले महाभारत के धर्मयुद्ध कुरुक्षेत्र में अर्जुन के रथ के सारथी भगवान् श्रीकृष्ण ने युद्ध से विमुख हुए अर्जुन को अट्ठारह दिनों में जिस उपदेश को दिया वही गीता है। इसे उपनिषदों का सार भी कहा जाता है। इस युद्ध और उपदेश को भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा प्राप्त दिव्यचक्षु से सञ्जय और बर्बरीक ने भी देखा।

## गीतायाम् अष्टादश अध्यायाः

**गीता में वर्णित विषय के अनुसार अध्याय विभाजन-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रथमोऽध्यायः- | अर्जुनविषादयोगः | द्वितीयोऽध्यायः- | सांख्ययोगः |
| तृतीयोऽध्यायः- | कर्मयोगः | चतुर्थोऽध्यायः- | ज्ञानकर्मसन्यासयोगः, |
| पञ्चमोऽध्यायः- | कर्मसंन्यासयोगः | षष्ठोऽध्यायः- | आत्मसंयम योगः, |
| सप्तमोअध्यायः- | ज्ञानविज्ञानयोगः | अष्टमोध्यायः- | अक्षरब्रह्मयोगः, |
| नवमोऽध्यायः- | राजविद्याराजगुह्ययोगः | दशमोऽध्यायः- | विभूतियोगः, |
| एकादशोऽध्यायः- | विश्वरूपदर्शनयोगः | द्वादशोऽध्यायः- | भक्तियोगः, |
| त्रयोदशोऽध्यायः- | क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागः | चतुर्दशोऽध्यायः- | गुणत्रयविभागयोगः, |
| पंचदशोऽध्यायः- | पुरुषोत्तमयोगः | षोडशोऽध्यायः- | दैवासुरसम्पद् योगः, |
| सप्तदशोऽध्यायः- | श्रद्धात्रययेगः | अष्टादशोऽध्यायः- | मोक्षसंन्यासयोगः। |

## गीताऽमृतम्

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।** गीता-2.47

तुम्हारा अधिकार कर्म करने में ही है न कि फलों में कभी।

**योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय।**

**सिद्ध्यसिद्ध्यो समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥** गीता-2.42

हे धनञ्जय! तुम आसक्ति (आलस्य) को त्यागकर लाभ और हानि में समान बुद्धि वाला होकर एकाग्रचित्त होकर कर्म करो यही समत्व योग कहलाता है।

**तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ।** गीता-2.50

इसलिए समत्व योग में लग जाओ, यही योग कर्मों में कुशलता है।

**यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।**

**स यत् प्रमाणं कुरुते लोकः तदनुवर्तते॥** गीता- 2/21

श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करते हैं, अन्य लोग भी वैसा ही करते हैं। यह जो प्रमाण (साक्ष्य) प्रस्तुत करता है उसी के अनुसार लोग करने लग जाते हैं।

## पुराणम्

**सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।**
**वंशानुचरितं चैवं पुराणं पञ्च लक्षणम् ॥**

1. सृष्ट्युत्पत्तिः 2. सृष्टिसंहारः 3. वंशवर्णनम् 4. मन्वन्तरः (मनुष्यों की कालावधि) 5. वंशानुचरितम् (सूर्य-चन्द्र आदि वंशों का इतिहास।

इन पांच लक्षणों से युक्त विषय, स्तुति, उपवास, उत्सव, पर्व एवं तीर्थ आदि के अत्यन्त विस्तृत विवरण ग्रन्थ को पुराण कहा जाता है।

महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित अट्ठारह पुराण-

**मद्वयं भ-द्वयं चैव ब-त्रयं व-चतुष्टयम् ।**
**अ-ना-प-लिङ्ग-कू-स्कानि पुराणानि प्रचक्षते॥**

**मद्वयं=** मत्स्यपुराणम्, मार्कण्डेय पुराणम्।
**भ-द्वयं=** भागवत-महापुराणम्, भविष्यपुराणम् ।
**ब-त्रयं=** ब्रह्माण्डपुराणम्, ब्रह्मपुराणम्, ब्रह्मवैवर्तपुराणम् ।
**व-चतुष्टयम्=** वायुपुराणम्, विष्णुपुराणम्, वराहपुराणम्, वामपुराणम्।
**अ=** अग्निपुराणम्, **ना=** नारदपुराणम्, **प=** पद्मपुराणम्।
**लिङ्ग=** लिङ्गपुराणम्, **ग=** गरुड़पुराणम् **कू=** कूर्मपुराणम्
**स्क=** स्कन्दपुराणम् ।
**उपपुराणानां संख्या-** अष्टादश (18)

## भारतीय-सम्वत्

| सम्वत् | संस्थापकः | तिथिः |
|---|---|---|
| महावीर सम्वत् | स्वामी महावीर जैनः | 599ईसापूर्वम् |
| विक्रम सम्वत् (मालवासम्वत् / कृत् सम्वत्) | विक्रमादित्यः | 58 ई0 |
| शक सम्वत् | कनिष्कः | 78 ई0 |
| गुप्त सम्वत् (बल्लभी सम्वत्) | चन्द्रगुप्त प्रथमः | 319 ई0 |
| हर्ष सम्वत् | वर्धनवंशीयः हर्षः | 606 ई0 |
| इलाही सम्वत् | मुगलशासकः अकबरः | |
| हिजरी सम्वत् | हजरत मो0 साहब | 622 ई0 |

## ऋषिमुनिपरम्परा

**भारद्वाजः-** भारद्वाज ऋषि के पिता महर्षि अत्रि तथा गुरु महर्षि बाल्मीकि थे। तीर्थराज प्रयाग इनकी तपस्थली थी आज भी वहाँ भारद्वाज आश्रम है। श्रीरामचन्द्र जी वनगमन के समय सर्वप्रथम ऋषि भारद्वाज के आश्रम गये थे।

**याज्ञवल्क्यः-** याज्ञवल्क्य ऋषि मुनि वैशम्पायन के शिष्य थे। ये राजा जनक के दरबार में रहते थे। महाविदुषी मैत्रेयी और कात्यायनी इनकी पुत्रियां थीं। इनकी प्रसिद्ध टीका मिताक्षरा एवं याज्ञवल्क्य स्मृति तथा शिक्षा ग्रन्थ हैं।

**वशिष्ठः-** महर्षि वशिष्ठ का जन्म ब्रह्मा जी की प्राणशक्ति से हुआ, ऐसा माना जाता है । इनकी पत्नी का नाम अरुन्धती था। जिन्हें लोकमाता या ऊर्जाशक्तिरूपा माना जाता है। इक्ष्वाकु वंशीय दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम आदि राजाओं के कुलगुरु थे। इनकी रचना 'योगवासिष्ठ' है।

**पाणिनिः-** महर्षि पाणिनि एक महान वैयाकरण थे। इनकी रचना अष्टाध्यायी विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ है। अष्टाध्यायी की वैज्ञानिक शैली के कारण विद्वान इन्हें महासंगणक (Super Computer) कहते हैं। इसी शैली के कारण वैज्ञानिकों ने संस्कृत को संगणक (Computer) के लिए सरल भाषा माना है । पाणिनि के माता का नाम दाक्षी एवं पिता का नाम पणिन था। एतदर्थ इनका नाम पाणिनि एवं दाक्षीपुत्र पडा। शालातुर इनका जन्म स्थान था। जो इस समय अफगानिस्थान मे लहुर ग्राम है। आज भी वहाँ महर्षि पाणिनि एवं उनके ग्रन्थ के प्रति वहाँ के लागों में श्रद्धा है। तथा इनकी प्रतिमा वहाँ विराजमान है, ऐसा ऐतिहासिकों का कथन है। महर्षि पाणिनि के गुरु का नाम आचार्य उपवर्ष था, जो नालन्दा विश्वविद्यालय में आचार्य थे। महामुनि पाणिनी भगवान शिव को तपस्या से प्रसन्न कर चौदह सूत्र प्राप्त किए। जो भगवान शंकर द्वारा नृत्त के समय ढक्का (डमरू) से निकले। इन्हीं चतुर्दश सूत्रों को आधार मानकर लगभग चार हजार सूत्रों की रचना की, ये सूत्र 8 अध्यायों (प्रत्येक में 4 पाद) में विभक्त है अतः इसे '**अष्टाध्यायी**' कहते हैं। इस प्रकार इन्होंने व्याकरण के पठन-पाठन परम्परा को वैज्ञानिक प्रकार दिया। जिस वैज्ञानिकता से आज पूरा विश्व संस्कृत व्याकरण से आकृष्ट है।

### चतुर्दश माहेश्वर-सूत्राणि-

1.अइउण्, 2.ऋऌक् 3.एओङ्, 4.ऐऔच्, 5. हयवरट्, 6.लण्, 7.ञमङणनम्, 8.झभञ्, 9.घढधष्, 10.जबगडदश, 11.खफछठथचटतव्, 12.कपय्, 13.शषसर्, 14.हल् ।

## धन्योऽयं भारतदेशः

**सांस्कृतिकं स्थलम् -**

**1. सारनाथः-** सारनाथः उत्तरप्रदेशस्य वाराणसी जनपदे, गंगानद्याः पावनतटे स्थितः अस्ति। अत्र भगवान् बुद्धः प्रथमम् धर्मोपदेशं अददात् । अतः एतत् स्थानम् बौद्धतीर्थ-रूपेण प्रसिद्धम् अस्ति। बौद्धशिक्षायां 'धर्मचक्रप्रवर्तन' नाम्नाः प्रसिद्धम् अस्ति। एतस्य अपरं नाम- ऋषिपत्तनं, मृगदावः, सारङ्गनाथः अस्ति। अत्र धम्मेक स्तूपः, सिंह शीर्षकः (अशोक-स्तम्भः) प्राच्यसंग्रहालयः, भगवतः बुद्धस्य सर्वोच्चप्रतिभा/सारङ्गमन्दिरम् च अस्ति।

**2. इन्द्रप्रस्थः-** एतत् नवदिल्लीं निकषा स्थितम् अस्ति। महाभारतकाले एतत् स्थानं कौरवानं राजधानी आसीत्। धर्मराजः युधिष्ठिरः अत्रैव राजसूय-यज्ञम् अकरोत्।

**3. कपिलवस्तु-** शाक्यानां राजधानी कपिलवस्तु आसीत्। अत्रैव बौद्धधर्मप्रवर्तक-महात्माबुद्धस्य जन्मस्थली अपि अस्ति। सम्प्रति नेपालदेशस्य कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर) जनपदे लुम्बिनी वनम् इति प्रसिद्धम् अस्ति।

**4. अमरनाथः-** एतत् स्थानं जम्मू-कश्मीरे स्थितम् अस्ति। अत्र भगवान् शिवः मातापार्वतीम् अमरकथाम् अश्रावयत्। इमां कथां तत्र स्थितौ द्वौ कपोतौ अपि अशृणुताम्, कथां श्रुत्वा तौ अमरत्वम् आप्नुताम् एवं मन्यते । अद्यापि तयोः दर्शनं भवति, इति श्रूयते।

### तन्नो गुरुः प्रचोदयात्

| गुरवः | शिष्याः |
|---|---|
| मुनिः सान्दीपनिः | श्रीकृष्ण, सुदामा आदि |
| गुरुः परशुरामः | भीष्मपितामहः, कर्णः |
| कुमारिल भट्टः | मण्डन मिश्रः |
| श्री गोविन्दः भगवत्पादः | आद्य शंकराचार्यः |
| स्वामी समर्थ-रामदासः | छत्रपति शिवाजी |
| स्वामी बल्लभाचार्यः | सूरदासः |
| ऋषिः धौम्यः | आरुणी/उपमन्युः |
| गुरु नानकदेवः | बाला मरदाना |
| स्वामी विरजानन्दः | स्वामी दयानन्दः |
| स्वामी तोतापुरी जी | श्रीरामकृष्ण परमहंस |
| नरहर्यानन्दः | श्री गोस्वामी तुलसीदासः |

# विश्वमानसं संस्कृतवाङ्मयम्

| ग्रन्थः | ग्रन्थकारः | विवरणम् |
|---|---|---|
| ऋग्वेदः यजुर्वेदः | वेदविभाजकः महर्षिः | |
| सामवेदः अथर्ववेदः | वेदव्यासः | वैदिककालीन संस्कृतेः स्थापना। |
| मनुस्मृतिः | मनुः | वैदिक-संस्कृतेः संविधानम् |
| रामायणम् | महर्षिःबाल्मीकिः | 7काण्डाः, 24सहस्र-श्लोकाः श्रीरामचरित्रवर्णनम् |
| महाभारतम् | महर्षिः वेदव्यासः | 18 पर्वाणि, एकलक्षश्लोकाः |
| श्रीमद्भागवद्गीता | ,, ,, | 18 अध्यायाः, हिन्दुधर्मग्रन्थः |
| अष्टादश पुराणानि | ,, ,, | भगवतः विविध-रूपाणां वर्णनम् सृष्टि-संहार-प्रकृत्यादीनां विस्तृतं वर्णनम् । |
| व्याकरण-अष्टाध्यायी | महर्षिः पाणिनिः | व्याकरणप्रतिनिधि ग्रन्थः |
| व्याकरण-महाभाष्यम् | ,, पतंजलिः | व्याकरणसूत्राणां व्याख्यानम् |
| पञ्चतन्त्रम् | पं. विष्णुशर्मा | लोककथाः, नीतिकथाः |
| अर्थशास्त्रम् | कौटिल्यः | अर्थशास्त्रस्य आदिग्रन्थः |
| नाट्यशास्त्रम् | आचार्यः भरतमुनिः | नाट्यशास्त्रपरम्परायाः आरम्भः |
| रघुवंश-महाकाव्यम् | महाकवि-कालिदासः | 19 सर्गाः, दिलीप-रघु-अज-दशरथ-रामादि इक्ष्वाकुराजानां वर्णनम् |
| अभिज्ञानशाकुन्तलम् | ,, | 7 अंकाः, नाटकम् , दुष्यन्त-शकुन्तलायाः वर्णनम् |
| मेघदूतम् | ,, | दूतकाव्यम्, मेघ द्वारा यक्षसन्देश-कथनम्। |
| कुमारसंभवम् | ,, | स्वामी कार्तिकेयोत्पत्ति-वर्णनम् |
| काव्यप्रकाशः | आचार्य मम्मट | काव्यशिक्षण-लक्षणग्रन्थः |
| स्वप्नवासवदत्ता | भासः | उदयन-वासवदत्तायाः कथा |
| किरातार्जुनीयम् | भारविः | किरातवेशधारी शिव-अर्जुनयुद्धम् |
| शिशुपालवधम् | माघः | श्रीकृष्णद्वारा शिशुपालबधम् |
| नैषधीयचरितम् | श्रीहर्षः | नल-दमयन्त्याः चरित्र वर्णनम् |
| राजतरंगिणी | कल्हणः | ऐतिहासिकं महाकाव्यम् । |
| कादम्बरी | बाणभट्टः | गद्यविधायाः प्रसिद्धः ग्रन्थः। |

## केचन-अन्यग्रन्थाः

| ग्रन्थः | ग्रन्थकारः | विवरणम् |
|---|---|---|
| सत्यार्थप्रकाशः | स्वामी दयानन्द सरस्वती | आर्य-समाजस्य धर्मग्रन्थः |
| आनन्दमठः | श्रीबंकिमचन्द्र चट्टोपाध्यायः | प्रसिद्धः उपन्यासः(संन्यासी विद्रोहः) |
| गीता रहस्यम् | लोकमान्य बालगंगाधरतिलकः | गीतायाः व्याख्या |
| हनुमानचालिसा | गोस्वामी तुलसीदासः | भगवतः हनुमतः महिमा |
| गीताञ्जलिः | रवीन्द्रनाथ टैगोरः | वंगभाषायाः प्रसिद्धः काव्यग्रन्थः |
| बीजकः | कबीरदासः | कबीरपन्थस्य प्रमुखः ग्रन्थः साखी, सबद, रमैनी, संग्रहः |
| पृथिवीराज रासो | चन्द्रबरदाई | पृथिवीराजचौहानाधारित काव्यग्रन्थः |
| कामायनी | जयशंकर प्रसादः | छायावादस्य, प्रसिद्ध रचना |
| भारतभारती | मैथिलीशरण गुप्तः | भारत गौरववर्णनम् |

## स्मरणीय-दिवसः ( क )

| | |
|---|---|
| भारतीय नूतनसम्वत्सरः (नववर्षारम्भः) | चैत्र-शुक्ल-प्रतिपदा |
| श्री शंकराचार्य-जयन्तिः | वैशाख ,, पञ्चमी |
| गंगादशहरा | ज्येष्ठ ,, दशमी |
| संस्कृतदिवसः/उपकर्म (श्रावणी) | श्रावण- पूर्णिमा |
| गीता जयन्तिः | मार्गशीर्ष ,, एकादशी |
| बसन्तपञ्चमी (सरस्वती पूजा) | माघ-शुक्ल-पञ्चमी |

## ( ख )

| | | |
|---|---|---|
| प्रवासी-भारतीय-दिवसः | (महात्मा गान्धिः 20 वर्षानन्तरं भारतम् आगच्छत्) | 9 जनवरी 2003 तः |
| विश्व-हिन्दी-दिवसः | (नागपुर-महाराष्ट्रे प्रथम-विश्वहिन्दी सम्मेलनम् अभवत्) | 10 जनवरी 2006 तः |
| युवा दिवसः | (स्वामी विवेकानन्दस्य जन्म तिथिः) | 12 जनवरी |
| बालिका दिवसः | (सामाजिक कुरीति विषये जनजागरणम् ) | 24 जनवरी 2009 तः |
| शहीद दिवसः | (महात्मागान्धिनः पुण्यतिथिः) | 30जनवरी 1948 |
| अन्तर्राष्ट्रीय-महिला-दिवसः | (नारी सम्मानः) | 8 मार्च |
| ,, जल दिवसः | (जलसंरक्षणम्) | 22 मार्च |
| ,, स्वास्थ्य दिवसः | (स्वस्थायु चिन्तम्) | 7 अप्रैल |
| पृथ्वी दिवसः | (पृथिव्या महिमवर्णनम्) | 22 अप्रैल |

| | |
|---|---|
| आतंकवाद विरोध-दिवसः (राजीव गांधी पुण्यतिथि) | 21 मई |
| हिन्दी पत्रकारिता दिवसः (1826 ईस्वीये प्रथम-हिन्दी-साप्ताहिक पत्रिकायाः प्रकाशनम् आरब्धम्) | 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई |
| विश्वपर्यावरण दिवसः | 5 जून |
| ,, साक्षरता दिवसः | 8 सितम्बर |
| हिन्दी दिवसः (संविधाने राजभाषा रूपेण हिन्दी स्वीकृता) | 14 सितम्बर |
| लालबहादुर शास्त्री जयन्तिः, गान्धी जयन्तिः, विश्व अहिंसा दिवसः | 2 अक्टूबर |
| शिक्षा दिवसः (प्रथम शिक्षामन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजादस्य जन्मतिथिः) | 11 नवम्बर |

## भारतीयं विज्ञान-वैभवम्

| | |
|---|---|
| भरद्वाजः | विमानविषयक विद्यायाः जनकः |
| कणादः | परमाणुवाद-प्रवर्तकः |
| सुश्रुतः | त्वचारोपण-प्रक्रियायाः जनकः |
| भास्कराचार्यः | गणितज्ञः, ज्योतिषी च |
| चन्द्रशेखर वेंकट रामन् | भौतिकी क्षेत्रे प्रकाशीय-विशिष्टप्रभावस्य गवेषकः (रामनप्रभावः) |
| डा0 हरगोविन्द खुराना | (जीन्स) संश्लेषणम् । |
| श्री सत्येन्द्रनाथ बोसः | 'सांख्यिकी' इत्यस्य जन्मदाता। 'बासोन्' इति कणस्य आविष्कर्ता च। |
| प्रो0 श्यामसुन्दर जोशी | विद्युतीय क्षेत्रे 'नाइट्रोजन' इत्यस्य भौतिकी रासायनिकी क्रियाणाम् अन्वेषकः। |

## भारतीय-विज्ञान-वैभवग्रन्थाः

| ग्रन्थः | ग्रन्थकारः | विषयाः |
|---|---|---|
| अंशुबोधिनी | भारद्वाजः | सौरशक्तिः, प्रकाशः, ऊष्णताः, वर्णः च। |
| नारायणसूक्तम् | ,, | रक्तपरिचलनं, शरीररचनम् इत्यादयः। |
| विश्ववादम् | ,, | रसायनशास्त्रम् । |
| सूपशास्त्रम् | सुकेश-ऋषिः | पाकविज्ञानम् । |
| अक्षरलक्ष-गणितशास्त्रम् | महर्षिः बाल्मीकिः | गणितस्य 64 सिद्धान्ताः। |
| चित्रकर्म | भीमऋषिः | चित्रकारिता, चलितचित्रकारिता। |
| कश्यपसंहिता | कश्यप-ऋषिः | बालरोगचिकित्सा। |
| अश्वचिकित्सा-शास्त्रम् | शालिहोत्र-ऋषिः | अश्वशिक्षणम्, प्रकाशः। |
| शक्तितन्त्रम् | अगस्त्यऋषिः | सौरशक्तिः, विद्युत, चुम्बकीयशक्तिः। |
| लोहतन्त्रम् | शाकटायनः | रससिद्धान्तः, लोहादिधातवः च । |

## विश्वं शिक्षयति, गणितवैभवम्

| | |
|---|---|
| गणित विद्यायाः जनकः | ऋग्वेदः |
| शून्य-आविष्कारकः | आर्यभट्टः |
| शून्यस्य प्रथमप्रयोगः | भारते अभवत् |
| भारतीय अंकगणितस्य सर्वप्राचीनः ग्रन्थः | वक्षाली हस्तग्रन्थः |
| 'सूर्यः स्थिरः अस्ति' इत्यस्य प्रतिपादनकर्ता/ ज्या-कोटिज्या | आर्यभट्टः |
| गणिते 'अनन्त' इत्यस्य प्रतिपादनकर्ता | ब्रह्मगुप्तः |
| वैदिकगणितभाष्यकारः | स्वामी भारतीकृष्णतीर्थः |

| ग्रन्थकर्ता | ग्रन्थनाम |
|---|---|
| सिद्धान्तग्रन्थः, पंचसिद्धान्तिका | आर्यभट्टः |
| बृहज्जातकम् | वराह मिहिरः |
| महाभास्करीयम्, आर्यभट्टीयभाष्यम् लघुभास्करीयम् । | भास्करः |
| सिद्धान्तशेखरः, गणित-तिलकम् | श्रीपति मिश्रः |
| नवशतिका, त्रिशतिका, पाटी-गणितम् | श्रीधराचार्यः |
| दीर्घवृत्त-लक्षणम्, समीकरण-मीमांसा | सुधाकर द्विवेदी |
| ताजिक-नीलकण्ठी। | नीलकण्ठः |

### प्रथमम्

* **एकोऽहं द्वितीयः नास्ति** - एकमात्र मैं हूँ कोई दूसरा नहीं- श्रीकृष्णः (गीतायाम्)
* **एकैवाऽहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा** - इस संसार में एकमात्र मैं हूँ, मेरे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं- आदि शक्ति दुर्गा (सप्तशती)
* **एकोऽहं बहुस्याम**- मैं एक हूँ शेष मेरे रूप हैं।
* **प्रथम-भारतीय अन्तरिक्षयात्री**- (पुरुषः) स्क्वाडन लीडर राकेश शर्मा
* ,, ,, ,, - (महिला) कल्पना चावला
* **प्रथम-महिला राज्यपालः** - (महिला) सरोजिनी नायडू (उ.प्र.)
* **प्रथम-आई.पी.एस. अधिकारी**- (महिला) किरण वेदी (मैग्शेषे पुरस्कृता)
* **प्रथम-भारत-रत्न प्राप्तकर्ता** - डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् (पूर्व-शिक्षामन्त्री)
* **भारतस्य प्रथमं चलचित्रम्** -(मूकम्) राजा हरिश्चन्द्रः (1913) निर्माता दादा साहब फाल्के

* **भारतस्य प्रथमं चलचित्रम्-** (सवाक्) आलम आरा (1913) ए.एम.ईरानी
* **पातञ्जलयोग सूत्रस्य प्रथमं सूत्रम् -** अथ योगानुशासनम्
* **वेदान्त दर्शनस्य प्रथमं सूत्रम् -** अथातो ब्रह्म जिज्ञासा
* **श्रीमद्-भगवद्-गीतायाः प्रथमः श्लोकः -**

**धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।**
**मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥1॥**

हे सञ्जय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्रित युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया? (धृतराष्ट्र ने सञ्जय से प्रश्न किया)

## द्वितीयम्

* **संक्रान्ति-द्वयम् -** कर्कसंक्रान्तिः, मकरसंक्रान्तिः च ।
* **आयन-द्वयम् -** उत्तरायणं दक्षिणायनम् च ।

एकस्मिन् वर्षे माघतः फाल्गुन-चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढःमासं यावत् (षड्मासपर्यन्तम्) सूर्यः उत्तरायणे (उत्तरदिशि) तिष्ठति। उत्तरायणे मकरसंक्रान्तिः भवति ।

श्रावणतः, भाद्रपद-आश्विन्-कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौषमासं यावत् (षड्मासपर्यन्तम्) सूर्यः दक्षिणायने (दक्षिण-दिशि) तिष्ठति। दक्षिणायने कर्क-संक्रान्तिः भवति ।

## तृतीयम्

* **शतकत्रयम्** - शृंगारशतकम् वैराग्यशतकम् , नीतिशतकम् (भर्तृहरिः)
* **त्रीणि नाटकानि-** अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्नि-मित्रम् (कालिदासः)।
* **प्राचीन-भारते तिस्रः लिपयः -** ब्राह्मी, खरोष्ठी, सिन्धुः।
* **त्रिस्रः अवस्थाः -** जाग्रदवस्था, स्वप्नावस्था, सुषिप्त्यवस्था च।
* **त्रीणि नास्तिक-दर्शनानि-** चार्वाक-दर्शनम्, जैन-दर्शनम्, बौद्ध- दर्शनम्
* **प्रस्थानत्रयी**-(मोक्षसाधकाः ग्रन्थाः) ब्रह्मसूत्रम्, गीता, उपनिषद्।
* **बृहत्त्रयी** (विशालं महाकाव्यम्)- शिशुपालबधम् (कवि-माघः) किरातार्जुनीयम् (कवि-भासः) नैषधीयचरितम् (कवि-श्रीहर्षः)
* **त्रयः व्याकरणमुनयः -** पाणिनिः, कात्यायनः, पतञ्जलिः ।

(महर्षिः पाणिनिः व्याकरण**सूत्राणि** रचितवान्, सूत्राणां परिष्कारार्थम् आचार्य-कात्यायनः **वार्तिकानि** अलिखत्, सूत्र-वार्तिकयोः व्याख्यानं **महाभाष्यं** महर्षिः पतञ्जलिः अलिखत्)

* **त्रयः तापाः -** दैहिकं, दैविकं, भौतिकम् ।

## चतुर्थम्

* **चत्वारः वेदभागाः** - संहिता, ब्राह्मणम्, आरण्यकम्, उपनिषद् ।
* **ब्राह्मणः चत्वारः मानसपुत्राः**- सनकः, सनन्दनः, सनातनः, सनत्कुमारः (ऋषयः)
* **चत्वारि प्रमाणानि** (न्यायदर्शने)- प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, उपमानम्, शाब्दप्रमाणम्
* **चत्वारः मठाः** - प्राच्याम्- **गोवर्धनमठः**, पुरी-उत्कलप्रदेशः।
प्रतीच्यां **शारदामठः**, द्वारका-सौराष्ट्रम् (गुजर्रप्रान्तः),
उदीच्यां-**ज्योर्तिमठः**, बद्रीनाथ-उत्तराखण्डः,
अवाच्यां **शृंगेरीमठः**, शृंगेरी-कर्णाटकम् ।

(श्रीमद् आद्य जगद्गुरुः शंकराचार्यः सनातन धर्मस्य प्रचार-प्रसाराय चतुर्षु दिक्षु चतुर्णां मठानां स्थापनाम् अकरोत्)।

* **नीति-चतुष्टयम्** - सामः, दामः, दण्डः, भेदः।
* **गति-चतुष्टयम्** - देवगतिः, मनुष्यगतिः, तिर्यग्गतिः, नारकगतिः।

(जीवन पर्यन्त किये गये कर्मों के अनुसार मनुष्य की चार प्रकार की गति होती है )।

## पञ्चमम्

* **पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि**- नेत्रम्, नासिका, कर्णः, जिह्वा, त्वक्।
* **पञ्च कर्मेन्द्रियाणि**- वाक्, हस्तः, पादः, पायुः, उपस्थः।
* **पञ्चतन्मात्राः** - गन्धः, रसः, रूपम्, स्पर्शः, शब्दः।

**पञ्च पल्लवाः**- न्यग्रोधः (वट), उदुम्बरः (गूलर), अश्वत्थः (पीपल), आम्रम् , प्लक्षः (पाकड़)।

कलश को भारतीय संस्कृति में मंगलसूचक माना गया है । कलश पूजन में इन पाँच वृक्षों के पल्लवों (पत्तों) को रखकर पूजन किया जाता है ।)

**पञ्चाङ्गम्** - तिथिः, दिनम्, नक्षत्रं, करणं, योगः ।

ज्योतिष द्वारा मुहूर्त निर्धारण में इनका प्रयोग होता है।)

**पञ्च-सरोवराः** - बिन्दुः, नारायणः, मानसरोवरः, पुष्करः, पम्पा।
(सिद्धपुरं सौराष्ट्रम् ), नारायणसरोवरः (कच्छ-सौराष्ट्रम्),
मानसरोवरः- त्रिविष्टपं (तिब्बत),
पुष्करसरोवरः (अजमेर-राजस्थानम्),
पम्पासरोवरः-तुंगभद्रादक्षिणे-कर्णाटकम्)

**पञ्च-रत्नानि**- स्वर्णम्, हीरा, मुक्ता, पद्मरागः, नीलमः ।

**पञ्च-कोषाः** - अन्नमयः, प्राणमयः, मनोमयः, विज्ञानमयः, आनन्दमयः।

**पञ्च-कोषाः -** प्राणः, अपानः, व्यानः, उदानः, समानः ।

**पञ्च-यज्ञाः -** देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, मनुष्ययज्ञः, ब्रह्मयज्ञः।

(देव-पितृ-भूतं-मनुष्य, ब्रह्म निमित्तं, एतेषां प्रसन्नार्थं वा यत् किमपि कार्यं क्रियते तदेव यज्ञः अस्ति)

**कामदेवस्य पञ्च-बाणाः -** अरविन्दम्, अशोकः, चूतं, नवमल्लिका, नीलोत्पलं।

## षष्ठः

**षड्-दर्शनम्** -(आस्तिकं) सांख्यं, योगः, न्यायः, वैशेषिकः, मीमांसा, वेदान्तदर्शनम्।

**षड्-रसाः-** (जिह्वायाः) मधुरः, आम्लः, लवणः, कटुः, कषायः, तिक्तः।

**षट्-चक्रम्** -(शरीरे)मूलाधारः, अधिष्ठानं, मणिपुरम्, अनाहतं, विशुद्धम् आज्ञा।

**षट्- शत्रवः** -कामः , क्रोधः, मदः, लोभः, मोहः, मत्सरः ।

**षड्-कर्माणि** (ब्राह्मणस्य) अध्ययनम्, अध्यापनं, यजनं, याजनम् , दानं, प्रतिग्रहः।

**भारतीय सम्बिधाने मूलभूत-अधिकाराणां व्यवस्था- षड्**

| | | |
|---|---|---|
| 1. समानतायाः अधिकारः | -अनुच्छेदः- | 14-18 यावत् । |
| 2. स्वतन्त्रतायाः अधिकारः | - ,, | 19-22 ,, |
| 3. शोषणं प्रति विरुद्धाधिकारः | - ,, | 23-24 ,, |
| 4. धार्मिक स्वतन्त्रतायाः अधिकारः | - ,, | 25-28 ,, |
| 5. संस्कृति-शिक्षासम्बन्ध्यधिकारः | - ,, | 29-30 ,, |
| 6. सम्वैधानिक-उपचाराणाम् ,, | - ,, | 32 |

## सप्तमम्

**सप्त-पुरयः- अयोध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका।**
**पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः॥**

**1.अयोध्या** (अवध)- सरयूनदी, उ.प्र., भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य जन्मभूमिः

**2.मथुरापुरी-** यमुना नदी, उ.प्र., भगवतः श्रीकृष्णस्य जन्मभूमिः

**3.मायापुरी**-(हरिद्वारम्) गंगानदी, उ.खण्डः कुम्भमेलास्थानम्

**4.काशी**-(वाराणसी) गंगानदी, उ.प्र., ज्योतिलिङ्गम् (बाबा विश्वनाथः)

**5.काञ्चीपुरी-** दक्षिणकाशी, तमिलनाडु आद्यशंकराचार्यमठः

**6.अवन्तिकापुरी-** उज्जैन म.प्र. महाकालेश्वर-ज्योतिलिङ्गम्, विक्रमादित्यस्य राजधानी

**7.द्वारावती-** द्वारका, गुर्जरप्रान्तः, आद्यशंकराचार्यद्वारा स्थापितम् शारदापीठम्

**सप्त-ऋषयः- कश्यपोऽत्रिः भरद्वाजः विश्वामित्रोऽथ गौतमः।**
**जगदग्निः वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥**

कश्यपः, अत्रिः, भरद्वाजः, विश्वामित्रः, गौतमः, जमदग्निः, वशिष्ठः।

**सप्तर्षि-तारामण्डलम्-** मरीचिः, अत्रिः, अंगिरसः, पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतुः, वसिष्ठः।

**सप्त-चिरजीविनः - अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।**
**कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥**

अश्वथामा, बलिः, व्यासः, हनुमान, विभीषणः, कृपाचार्यः, परशुरामः ।

**सप्त-द्वीपाः -** जम्मू, शाल्मलः, क्रौञ्चः, कुशद्वीपः, शाकद्वीपः, पुष्करः, लक्षद्वीपः।
(अस्माकं देशः जम्मूद्वीपे अस्ति)

**सप्त-पदार्थाः** (न्यायदर्शने)- द्रव्यं, गुणः, कर्म, सामान्यं, विशेषः, समवायः, अभावः।

**सप्त-सागराः-** लवणसागरः, इक्षुसागरः, घृतसागरः, दधिसागरः, क्षीरसागरः, स्वादुजलसागरः, मधुसागरः ।

**सप्त-ऊर्ध्वलोकाः-** भूर्लोकः, भुवर्लोकः, स्वर्लोकः, जनलोकः, तपोलोकः, सत्यलोकः।

**सप्त-अधोलोकः-** अतलः, वितलः, सुतलः, रसातलः, तलातलः, महातलः, पातालः।

**सप्त-मुख्यपर्वताः**(भारते)- **महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः ।**
**ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ॥**

महेन्द्रः(उत्कलप्रान्ते), मलयगिरिः(कर्णाटके), सह्यद्रिः(महाराष्ट्रे), हिमालयः, रैवतकः(काठियावाड), विन्ध्यकः(विन्ध्याञ्चलम् उ.प्र.), पारियात्रः(आरावली-राजस्थानम्)।

**सप्त-स्वराः**(संगीते)- षडज्, ऋषभः, गान्धारः, मध्यमः, पञ्चमः, धैवतः, निषाद्

**सप्त-मृत्तिकाः -** अश्वशाला, गजशाला, बल्मीक-मृत्तिका (बॉबी), संगमः (नदीनां) तडागः, राजद्वारम्, गोशाला।

(पूजन-प्रसङ्गे कलश स्थापन-समये एताः सप्तस्थान-मृत्तिकाः अपेक्षिताः भवन्ति) ।

**सप्त-कल्पाः -** पार्थिवः, कौर्मः, अनन्तः, नृसिंहः, प्रियः, श्वेतवाराहः, अमरः
(सम्प्रति 'श्वेतवाराह' कल्पः प्रचलति)

**सप्त-धान्यम् -** यवः (जौ), धान्यम् (धान), तिलः, मूगः, चणकः (चना), श्यामकः (साँवा), गोधूमः (गेंहूँ) । एतेषां प्रयोगः कलशपूजने भवति ।

## अष्टमम्

**अष्ट-सिद्धयः**-अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्तिः, प्राकाम्यः, ईशत्वम्, वासित्वम्

**अष्टांगयोगः-** यमः, नियमः, आसनम्, प्राणायामः, प्रत्याहारः, धारणा, ध्यानम् समाधिः।

**अष्ट-गणनाः-** वर्णः वैश्यं, तारा, योनिः, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूटं, नाडी।
(विवाह से पूर्व कुण्डली मिलान में इन आठों का मिलान होता है)

**अष्ट-लक्ष्म्यः -** आद्यलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, अमृतलक्ष्मी, कामलक्ष्मी, सत्यलक्ष्मी, भोगलक्ष्मी, योगलक्ष्मी।

**अष्टविध-विवाहः**- ब्राह्मम्, प्राजापत्यः, आर्षः, दैवः, गान्धर्वः, आसुरः, पैशाचः, राक्षसः

**अष्ट-गन्धाः**- अगरु, तगरः, चन्दनम्, कुंकुमं, देवदारुः, केसरः ।

**अष्टांग मार्गाः**- सम्यक् दृष्टिः, सम्यक् संकल्पः, सम्यक् वचनम्, सम्यक् कर्मान्तः, सम्यक् आजीवः, सम्यक् व्यायामः, सम्यक् स्मृतिः, सम्यक् समाधिः।

## नवमम्

**नवधा भक्तिः**-श्रवणं, कीर्तनं, स्मरणं, सेवा, पूजा, वन्दना, दासता, मित्रता, आत्मनिवेदनम्।

**नव-रत्नानि**- मुक्ता, माणिक्यं, वैदूर्यं, गोमेदः, वज्रम्, विद्रुमः, पद्मरागः, मारकतं, नीलमः।

**नव-सभारत्नानि** विक्रमादित्यस्य- धन्वन्तरिः, क्षपणकः, अमरसिंहः, शंकुः, बेतालभट्टः, घटकर्परः, कालिदासः, वराहमिहिरः, वररुचिः।

**नवद्रव्याणि**- (न्यायदर्शने)- पृथिवी, जलम्, अग्निः, वायुः, आकाशः, कालः, दिक्, आत्मा, मनः।

**नवगुणाः** यज्ञोपवीतस्य (जनेऊ)- शमः, दमः, तपः, शौचः, क्षमा, सरलता, ज्ञानम्, आस्तिकता।

| नवरसाः | नवस्थायीभावाः | गुणाः |
|---|---|---|
| 1. शृंगारः | रतिः | प्रसादः, माधुर्यम् |
| 2. हस्यम् | हासः | प्रसादः |
| 3. करुणः | शोकः | माधुर्यम् |
| 4. रौद्रः | क्रोधः | ओजः |
| 5. वीरः | उत्साहः | ओजः, प्रसादः |
| 6. भयानकः | भयम् | ओजः |
| 7. वीभत्सः | जुगुप्सा | ओजः, प्रसादः |
| 8. अद्भुतः | विस्मयः | - |
| 9. शान्तः | शमः (निर्वेदः) | माधुर्यम् |

## दशमम्

**दशविध-वक्तृत्वकलाः**- परिभाषितं, सत्यं, मधुरं, सार्थकं, परिस्फुटं, परिमितं, मनोहरं, विचित्रं, प्रसन्नं, भावानुगतम् ।

**दश-कामावस्थाः**- अभिलाषा, चिन्ता, स्मृतिः, गुणकीर्तनम्, उद्वेगः, प्रलापः, उन्मादः, व्याधिः, जड़ता, मरणम् ।

**दश-दिक्पालाः**- इन्द्रः, अग्निः, यमः, निर्ऋतिः, वरुणः, वायुः, कुबेरः, ईशानः, ब्रह्मा, अनन्तः।

## एकादशः

**एकादश-रुद्रः-** पशुपतिः, शिवः, विरूपः, विश्वरूपः, भैरवः, त्र्यम्बकः, शूलपाणिः, कपर्दिन् , ईशानः, महेशः।

## द्वादशः

**द्वादश-राशयः-** मेषः, वृषः, मिथुनः, कर्कः, सिंहः, कन्या, तुला, वृश्चिकः, धनुः, मकरः, कुम्भः, मीनः।

**द्वादश-ज्योर्तिलिङ्गानि -**

**सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।**
**उज्जैन्यां महाकालम् ओङ्कारम् अमलेश्वरम् ॥**
**परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।**
**सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुका वने ॥**
**वाराणस्यां तु विश्शं घुश्मेशं च शिवालये ।**
**हिमालये तु केदारं त्र्यम्बकं गौतमी तटे ॥**

**सोमनाथः**(गुर्जरप्रान्ते), **मल्लिकार्जुम्** (श्रीशैलपर्वते,आन्ध्रप्रदेशे), **महाकालेश्वरः**(उज्जन-मध्यप्रदेशे), **ओंकारेश्वरः**(छत्तीसगढे), **वैद्यनाथः**(परली-महाराष्ट्रे), **भीमशंकरः**(डाकिनीवनम् महाराष्ट्रे), **रामेश्वरम्**(तमिलनाडुप्रदेशे), **नागेश्वरः**(गुर्जरप्रान्ते), **विश्वनाथः**(उ.प्रदेशे), **घुश्मेश्वरः/ घृष्णेश्वरः**(महाराष्टे), **केदारनाथः**(उत्तराखण्डे), **त्रयम्बकेश्वरः**(नासिक-महाराष्ट्रे) ।

## संस्कृत पत्र-पत्रिकाः (प्रकाशन-स्थानम्)

| | |
|---|---|
| सम्भाषण सन्देशः (मासिकी) | - बेंगलूरूतः |
| संस्कृत चन्दमामा (मासिकी) | - चेन्नै |
| विश्वभाषा (त्रैमासिकी) | - वाराणसीः रामनगरतः |
| भारतोदयः (मासिकी) | - हरिद्वारतः |
| वाक (साप्ताहिकं पत्रम्) | - देहरादूनतः |
| अमरवाणी | - वाराणसीतः |
| गाण्डीवम् (साप्ताहिकं पत्रम्) | - वाराणसीतः |
| सुधर्मा (दैनिकम्) | - मैसूरतः |
| लोकसंस्कृतम् | - पाण्डिचेरी |

# शिक्षा केन्द्राणि

प्राचीन-भारतीय-शिक्षा-व्यवस्थायां मुख्यस्थानं बालकस्य सर्वाङ्गीणविकासः आसीत्। उपनयन-संस्कारानन्तरम् एव वेदादि शिक्षा-प्राप्तये प्रवेशः भवति स्म।

**-शिक्षायाः त्रिविधं स्वरूपम्** - श्रवणं, मननं, निदिध्यासनम् (आचरणम्)

**-शिक्षाविषयाः**- आध्यात्मिकं लौकिकं च।

-वेदः, वैदिकसाहित्यं, वेदाङ्गं, दर्शनम्, इतिहासः, पुराणं, स्मृतिग्रन्थः, साहित्यं, क्षत्रविद्या, नृत्यं, संगीतं, वाद्यं, शिल्पादि चविषयाः आसन् ।

**प्रयोगशाला**- प्रयोगशालायाः कार्यं यज्ञेषु, सम्मेलनेषु, परिषत्सु च भवति स्म।

**प्राचीनभारतस्य प्रमुख-शिक्षाकेन्द्राणि-**

**1. तक्षशिला विश्वविद्यालयः** -

* एषः पाकिस्ताने पेशावर नामके जनपदे अवस्थितः आसीत् ।
* वैदिकशिक्षायाः प्रसिद्धं केन्द्रम् आसीत् ।
* ग्रीस, पश्चिमी एशिया तथा चीनतः छात्राः पठितुम् आगच्छन्ति स्म।
* अस्य विश्वविद्यालयस्य **प्रसिद्धाः विभूतयः**- महर्षिः पाणिनिः, चाणक्यः, कौटिल्यः, जीवकः, सम्राट् चन्द्रगुप्तः, पुष्यमित्रः च।
* पञ्चमशताब्द्यां हूणशासकैः केन्द्रमिदं विनाशितम्।

**2. नालन्दा विश्वविद्यालयः** - सम्प्रति बिहारप्रान्ते नालन्दा इति स्थाने अवस्थितः आसीत्। **एतस्य संस्थापकः** सम्राट् अशोकः आसीत् । एषः बौद्धकालीन-शिक्षायाः केन्द्रम् **आसीत्** । **एषः एक क्रोशं** (1 मीलं) यावत् विस्तीर्णः आसीत् । अत्र अनेकाः जलाशयाः, **बिहारस्थलानि** अनेकानि भवनानि निर्मितानि आसन् । अत्र विश्वप्रसिद्धं नवभूमिकं (नवमञ्जिला) पुस्तकालयः अपि आसीत् ।

**तिब्बत, चीन, कोरिया, वर्मा**, जावा, सुमात्रा, आदि नाना देशेभ्यः छात्राः आगत्य पठन्ति स्म। **एषः 800 वर्ष** यावत् निरन्तरं प्रगतिपूर्वकम् अग्रेसरः आसीत् ।

* **द्वादश शताब्द्यां** मुस्लिम-आक्रान्ता **बख्तियार खिलजी** एतं विश्वविद्यालय अविनाशयत्,विशालं पुस्तकालयं च अज्वालयत्, आचार्यान् छात्रान् च निर्ममतया अमारयत् ।

**3. विक्रमशिला विश्वविद्यालयः** - एतस्य स्थापनाम् अष्टम-शताब्द्यां पालव-वंशीय-**धर्मपाल** नामकः शासकः बंगप्रदेशे अकरोत् । अत्र निःशुल्कं शिक्षा व्यवस्था आसीत् । नाना देशेभ्यः छात्राः आगत्य पठन्ति स्म।

* रक्षितः, विरोचनः, ज्ञानपादः, बुद्धः जेतारिः, रत्नाकरः, ज्ञानश्रीमित्रम् , रत्नवज्रः, अभयंकरः, दीपंकरः, इत्यादयः, विख्याताः, विद्वांसः आसन्।

* 1203 ईस्वीये मुस्लिम-शासकः **'बख्तियार खिलजी'** इमं विश्वविद्यालयम् अविनाशयत्।

**4. वलभी शिक्षाकेन्द्रम् -** गुर्जरप्रान्ते-समुद्रतटे **काठियावाड** इति स्थाने बौद्धभिक्षूणां प्रधानशिक्षाकेन्द्रम् आसीत्। प्रसिद्धः चीनयात्री **हुएन सांग,** अस्य तुलना नालन्दा विश्वविद्यालय-समम् अकरोत्। अत्र 100 कोट्याधिपतयः निवसन्ति स्म। एतेषाम् आर्थिक-सहयोगः प्राप्यते स्म। मुस्लिम-आक्रमण-प्रभावात् अस्य महत्वं समाप्तं जातम् ।

**5. मिथिला विश्वविद्यालयः-** अयं वैदिककालीन-शिक्षापरम्परायाः प्रसिद्धः विश्वविद्यालयः आसीत्। मिथिलानरेशः राजा जनकः कुरु-पाञ्चाल आदि देशेभ्यः दार्शनिकान्, विदुषः आहूय शास्त्रार्थम् कारयति स्म। प्रसिद्धाः विद्वांसः- याज्ञवल्क्यः, गार्गी, मैत्रेयी च आसीत्।

**6. सरस्वती मन्दिरम् -** राजस्थानप्रान्ते अजमेर नामके स्थाने इदं शिक्षामन्दिरम् स्थितम् आसीत् । एतस्य स्थापना **चाहुआन ( चौहान ) वंशीय** शासनकाले अभवत्। इदं भवनम् वास्तुकला दृष्ट्या दर्शनीयं प्रसिद्धञ्च आसीत् । पश्चात् मुस्लिम-आक्रान्तैः ध्वस्तीकृतमिदं भवनम् । अद्यत्वे इदं स्थानम् **'अढाई दिन का झोपड़ा'** इति नाम्ना प्रसिद्धम् अस्ति।

एवमेव, काशी, कश्मीर, कन्नौज, कॉञ्ची आदि अति-प्रसिद्धानि शिक्षाकेन्द्राणि आसन् । अत्र मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, राष्ट्रदेवो भव, इति भावनायाः,सामाजिकमूल्यानां, नैतिकतायाः, मानवतायाः च विकासः भवति स्म।

***

**संस्कृतकवि वैशिष्ट्यम्**

**उपमा कालिदासस्य, भारवेः अर्थगौरवम् ।**
**दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥**

| कविः | वैशिष्ट्यानि |
|---|---|
| कालिदासः | उपमा |
| भारविः | अर्थगौरवम् |
| दण्डी | पदलालित्यम् |
| माघः | उपमा, अर्थगौरवम्, पदलालित्यं च। |

| अन्योपाधयः | |
|---|---|
| दीपशिखा | कालिदासः |
| छत्रम् (आतपत्रम्) | भारविः |
| घण्टा | माघः |
| अनङ्गः | श्री हर्षः |
| तुरङ्गः | बाणभट्टः |
| यमुनाः | त्रिविक्रमः |

## मातृ-पितृ चरणकमलेभ्यो नमः

| महापुरुषः | माता/पिता | महापुरुषः | माता/पिता |
|---|---|---|---|
| आद्यशंकराचार्यः | आर्यम्बा/शिवगुरुः | वेदव्यासः | सत्यवती/महर्षिः पराशरः |
| महर्षिः दुर्वाषा | अनसूया/अत्रिः | भीष्मः | गंगा/शान्तनुः |
| स्वामी विवेकानन्दः | भुवनेश्वरी/विश्वनाथदत्तः | अभिमन्युः | सुभद्रा/अर्जुनः |
| लव-कुशौ | सीता/रामः | कृष्णः | देवकी/वसुदेवः |
| द्रोणाचार्यः | घृताची/भरद्वाजः | प्रह्लादः | कयाधु/हिरण्यकश्यपुः |
| रामकृष्णपरमहंसः | चन्द्रादेवी/खुदिराम चटर्जी | ध्रुवः | सुनीतिः/उत्तानपादः |
| लक्ष्मीबाई | भागीरथीबाई/मोरो पन्तः | परशुरामः | रेणुका/जमदग्निः |
| छत्रपति शिवाजी | जीजाबाई/सम्भाजी | महात्माबुद्धः | मायादेवी/शुद्धोधन |

## धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ( पन्थ-धर्मग्रन्थाश्च )

| स्थलम् | धर्मः | धर्मग्रन्थः | प्रणेताः |
|---|---|---|---|
| मंदिरम् | हिन्दु (सनातन) | श्रीमद्भगवद्गीता | भगवान् श्रीकृष्णः |
| गुरुद्वारम् | सिख-धर्मः | श्री गुरुग्रन्थसाहबः | श्री गुरुनानकः |
| बौद्धमंदिर | बौद्ध-धर्मः | त्रिपिटकः | महात्मा बुद्धः |
| यज्ञशाला | आर्य-समाजः | सत्यार्थप्रकाशः | स्वामी दयानन्द सरस्वती |
| मंदिरम् | जैन-धर्मः | जैनागमः (जिनवाणी) | स्वामी महावीरः |
| मस्जिद् | इस्लामः | कुराणः | हजरत मो. साहबः |
| चर्च | ईसाई | बाइबिल | ईसा (क्राइस्ट) |

## सुभाषितामृतम्

**अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलम् अनौषधम् ।**
**अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकः तत्र दुर्लभः ॥**

कोई भी अक्षर ऐसा नहीं होता है जिससे मन्त्र नहीं बन सकता। ऐसी कोई वनस्पति नहीं जिसकी औषधि नहीं बन सकती। प्रत्येक व्यक्ति का उपयोग किया जा सकता है। केवल योजक की आवश्यकता है। कोई भी वस्तु निरुपयोगी नहीं है। उसके उपयोग करने की क्षमता वाले व्यक्ति की आवश्यकता है।

**वरम् एको गुणी पुत्रो न च मूर्ख - शतान्यपि।**
**एकः चन्द्रः तमो हन्ति न च तारा गणोऽपि च ॥**

सौ मूर्ख पुत्रो से एक गुणवान पुत्र अच्छा है। जैसे सौ तारागण अन्धकार को दूर नहीं करते, इस अन्धकार को एक चन्द्रमा ही दूर कर देता है।

## प्रमुख-नद्यः

| नदी | उद्गमः | प्रमुखं प्रवाह क्षेत्रम् | सहायक नद्यः |
|---|---|---|---|
| सिन्धुः | तिब्बते मानसरोवरं निकषा | लद्दाखः, बलूचिस्तानः जम्मू-कश्मीरः पाकिस्तानः | सतलज, व्यास रावी, चिनाव झेलम आदि |
| सतलजः | मानसरोवर प्रपातः (राक्षसतालः) | तिब्बत, कुल्लू शिवालिंक, पंजाब | सिप्ती वासपा |
| झेलम- | कश्मीरे शेषनाग-प्रपातः | जम्मू-कश्मीरे बुलर प्रपातः | किशनगंगा |
| व्यासः | रोहतांग दर्रा समीपे | शिवालिंक पंजाब | पार्वती, सैन्ज तीर्थन |
| गंगा | केदारनाथ-शिखरे गोमुखम् | उत्तराखण्ड, उ.प्र. बिहार, पं.बंगाल बंग्लादेश | अलकनन्दा, यमुना भागीरथी, रामगंगा गोमती, घाघरा गण्डक, कोसी टौंस, बागमती |
| यमुना | यमुनोत्री उत्तराखण्डः | उत्तराखण्ड उ.प्र. | गिरि, आलम चम्बल,बेतवा,केन |
| गोमती | पीलीभीतः | उत्तराखण्ड उ.प्र. | सई, वर्ना आदि |
| घाघरा (सरयू) | तिब्बते मानसरोवर-राक्षसतालः | नेपालः, उ.प्र. | राप्ती, शारदा छोटी गण्डक |
| चम्बल- | मध्यप्रदेशे-मऊ समीपम् | मध्यप्रदेशः, उज्जैनः राजस्थानः | काली सिन्ध,बनारस क्षिप्ता, दूद्धी |
| ब्रह्मपुत्रः | मानसरोवर-समीपं | लद्दाखः, असम, अरुणांचल प्रदेशः | डिवोंम, डिहांग, धनसीरी, मानस |
| गोदावरी | नासिक-महाराष्ट्रम् | महाराष्ट्रम्,आन्ध्र-प्रदेशः | पेनगंगा, वेनगंगा वर्धा |
| महानदी | मध्य-प्रदेशः | मध्यप्रदेशः, छत्तीसगढ़ः झारखण्डः,उड़ीसा,महा, | |

# तेषाम् विवरणम् च

| अन्तमेलनम् | तटे स्थितानि नगराणि | तटबन्धः |
|---|---|---|
| कराची, अरबसागरः | हैदराबाद | -- |
| कपूरथलां निकषा | लुधियाना<br>फिरोजपुरम् | भाखड़ा नांगलः |
| चिनाव नद्याम् | श्रीनगरम् | -- |
| हरी पार्श्वे सतलजः | मण्डी | हरिः |
| बंगाल की खाड़ी इति सागरे | हरिद्वार, कानपुरम्<br>इलाहाबादः, वाराणसी<br>पटना, भागलपुरम्<br>कोलकाता | फरक्का<br>टिहरी |
| इलाहाबादे गंगायाम् | दिल्ली, मथुरा<br>आगरा, हमीरपुरम्<br>इलाहाबादः | -- |
| गाजीपुरे गंगायाम्<br>छपरा गंगा नद्याम् | लखनऊ जौनपुरम्<br>अयोध्या | --<br>घाघरा |
| इटावा-यमुनायाम् | -- | गाँधी सागरः<br>राणाप्रताप-सागरः<br>जवाहर-सागरः<br>(राजस्थानम्) |
| गंगा-नद्याम् | गुवाहाटी<br>डिबरूगढ़ः | -- |
| माचिलीपत्तने (बंगाल की खाड़ी) | नासिक-भद्राचलम् | -- |
| कटके | काकेट, संभलपुरम्<br>कटकः | हीराकुण्डः |

# वन्देभारतमातरम्

| | |
|---|---|
| भारतस्य राजधानी | - नव देहली |
| भारतस्य क्षेत्रफलम् | - 32,87263 वर्ग किमी. |
| भारतस्य जनसंख्या | - 1,210,193,422 (एक सौ इक्कीस करोड़) |
| भारतस्य राष्ट्रीय भाषा | - हिन्दी |
| भारतस्य सांस्कृतिक-भाषा | - संस्कृतम् |
| संविधान द्वारा स्वीकृत-भाषाः | - 22 (द्वाविंशतिः) |
| भारतस्य राज्यानि- | - 28 (अष्टाविंशतिः) |
| केन्द्र शासित राज्यानि- | - 7 (सप्तः) |
| विशेषाधिकार प्राप्तानि राज्यानि | - 11 (एकादश) |
| भारते व्यवहृताः मातृभाषाः | - 1652 (द्वि पञ्चाशत् अधिक षोडश शतम्) |
| क्षेत्रफलत् दृष्ट्या वृहत्तरम् राज्यम् | - राजस्थानम् |
| जनसंख्या दृष्ट्या वृहत्तरम् राज्यम् | - उत्तर-प्रदेशः |
| भारतीय ध्वज परिमाणम् लम्बा. चौ. | - 3:2 |
| राष्ट्रीय ध्वजस्य संविधानद्वारा स्वीकृति | - 22 जुलाई 1947 ई. |
| संविधान द्वारा ध्वजस्य लोकार्पणम् | - 14 अगस्त 1947 ई. |
| भारतस्य राष्ट्रीयं गानम् | - जनगणमन अधिनायक जय हे (गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोरः) |
| राष्ट्रीय-गानस्य स्वीकृतः समयः | - 52 पलम् (सेकेण्ड) |
| राष्ट्रीय-गानस्य स्वीकृतिः | - 24 जनवरी 1950 ई. |
| राष्ट्रीयं वाक्यम् | - सत्यमेव जयते (मुण्डकोपनिषद्) |

**भारते परमाणु ऊर्जायाः उत्पादनकेन्द्रम्**

| स्थानम् | प्रदेशः | स्थानम् | प्रदेशः |
|---|---|---|---|
| 1. तारापुरम् | - महाराष्ट्रम् | 2. रावतभाटा | - राजस्थानम् |
| 3. कलपक्कमः | - तमिलनाडु | 4. नरौरा | - उत्तरप्रदेशः |
| 5. काकरापारम् | - गुर्जरप्रान्तः | 6. कैगा | - कर्णाटकः |

**संङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।**
**देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानानाम् उपासते ॥**

पग से पग (कदम से कदम) मिलाकर चलो स्वर में स्वर मिलाकर बोलो, तुम्हारे मनों में समान बोध हो। पूर्वकाल में जैसे देवी ने अपना भाग प्राप्त किया, सम्मिलित बुद्धि से कार्य करने वाले उसी प्रकार अपना-अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।

*- शुभमस्तु -*

गङ्गा एकानदी अस्ति। एषा भारतस्य महत्त्वपूर्णानदी अस्ति। एषा हिमालयपर्वताद् निर्गच्छति। बंगालकी खाड़ी इति सागरस्य सुन्दरवनं यावत् विशालं भूभागं सिञ्चति। गङ्गा नदी भारतस्य प्राकृतिक सम्पदा अस्ति। अस्माकं भावनायाः आस्थायाः आधारः अस्ति। हिन्दुधर्मे जन्मकालाद् आरभ्य मृत्यु पर्यन्तं मातृवत् पालयति। कृषिकर्मसम्पादने अत्यन्तं विशिष्टं सहयोगं करोति। गङ्गानद्याः महिमा भारतीयशास्त्रेषु वेदेषु पुराणेषु, साहित्येषु वर्णित अस्ति। वयं भारतीयाः आदररूपेण 'गङ्गा माँ' इति सम्बोधनं कुर्मः।

## गङ्गा-नद्याः परिचयः -

**गङ्गायाः पर्यायवाचि-शब्दाः**- भागीरथी, जाह्नवी, देवनदी, मन्दाकिनी, विष्णुपदी, सुरसरि, सुरापगा, देवापगा, त्रिपथगा, नदीश्वरी, अलकनन्दा।

**गङ्गायाः उपनद्यः**- गण्डकः, घाघरा, कोसी, यमुना, सोन, महानन्दा, महाकाली, करनाली।

**भारते गङ्गानद्याः तटे स्थितानि नगराणि**-वाराणसी, हरिद्वारम् , प्रयागः, पटना।

**गङ्गानद्याः उद्गमः** - उत्तराखण्डे हिमालयस्य गोमुखात्, गंगोत्री स्थानात् ।

**गङ्गायाः प्रवाह-मार्गस्य दूरी**- 2525 कि0मी0।

**योगदानम्** - गङ्गा कृषि- पर्यटन- धार्मिक- क्रीडा- उद्योग-विकासादिषु महत्वपूर्ण योगदानं ददाति। स्वच्छं पवित्रं जलं ददाति। अस्या उपरि सेतुः, बन्धः, नदी-परियोजनाः अस्माकं विद्युत्, पेयं जलं, कृषिसिञ्चनादिकं पूरयन्ति।

**राष्ट्रीय-नदी**- गङ्गा- नवम्बर 2008 भारतसर्वकारेण गंगा नदी राष्ट्रीय नदी घोषिता।

**राष्ट्रीय-जलमार्गः**- इलाहाबादतः हल्दिया 1600 किमी गङ्गा नदी राष्ट्रीय जलमार्गः घोषितः। गंगानद्याः, प्रधानशाखा- भागीरथी अस्ति। उत्तराखण्डस्य कुमायूँ जनपदे हिमालये गोमुख नामकं स्थानम् अस्ति। तत्रैव यस्मात् स्थानत् गंगा प्रवहति तस्य नाम गंगोत्री अस्ति।

# गङ्गा नदी का प्रवाह कैसे बना?

हिमालय में नन्दा देवी, कामत पर्वत एवं त्रिशूल पर्वत से पिघलने वाला हिम-स्रोत गङ्गा नदी है। यद्यपि गङ्गा के आकार में अनेक छोटी-छोटी धाराओं का योगदान है। 6 बड़ी और उनकी 5 छोटी सहायक धाराओं का भौगोलिक तथा सांस्कृतिक महत्व है। अलकनन्दा की सहायक नदी धौली, विष्णुगंगा तथा मन्दाकिनी है। अलकनन्दा विष्णुप्रयाग में धौली गंगा से, नन्द प्रयाग में नन्दाकिनी नदी से कर्णप्रयाग में कर्णगंगा, ऋषिकेश रूद्रप्रयाग में मन्दाकिनी से और अन्त में देवप्रयाग में भागीरथी से संगम करती हुई बहने वाली धारा गङ्गा नदी है। संगम के इन स्थानों को पञ्चप्रयाग कहा जाता है। पञ्च प्रयागों से 200 किमी0 पर्वतीय मार्गों से होते हुए मैदानी भाग हरिद्वार को स्पर्श करती हैं। (देव प्रयाग में भागीरथी बायें एवं अलकनन्दा दाये मिलकर गंगा का निर्माण करती हैं।)

गङ्गा हरिद्वार से गढमुक्तेश्वर, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर होते हुए इलाहाबाद पहुँचती है। यहाँ यमुना से संगम होता है। यह हिन्दुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। इसे तीर्थराज प्रयाग कहा जाता है। यहाँ कुम्भ मेला भी लगता है। 2019 में यहाँ कुम्भ पर्व मनाया जायेगा।

- प्रयाग से गंगा आगे चलकर मोक्षदायिनी काशी (वाराणसी) में वक्र रूप लेती है। यहाँ गंगा उत्तरवाहिनी कहलाती हैं।
- मीराजापुर पटना, भागलपुर होते हुए पाकुर पहुँचती हैं। इस बीच घाघरा, सोन, गण्डक, कोसी आदि नदियाँ सहायक होती हैं।
- भागलपुर में राजमहल की पहाड़ियों से यह दक्षिणावर्ती होती हैं।
- पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के गिरिया स्थान के पास गंगा नदी भागीरथी और पद्मा इन दो शाखाओं में विभाजित हो जाती हैं।
- भागीरथी गिरिया से दक्षिण एवं पद्मा नदी दक्षिण पूर्व की ओर बहनें लगती है। यही फरक्का होते हुए बांग्लादेश में प्रवेश करती है।
- मुर्शिदाबाद शहर से हुगली शहर तक गंगा का नाम भागीरथी नदी तथा हुगली शहर से मुहाने तक गंगा का नाम हुगली नदी है।
- हुगली नदी कोलकाता, हावड़ा होते हुए सुन्दरवन भारतीय भाग सागर में जाकर मिलती है।
- पद्मा में ब्रह्मपुत्र से निकली शाखा नदी जमुना नदी एवं मेघना सुन्दरवन डेल्टा-बंगाल की खाड़ी में संगम करती है। इसे गंगासागर संगम भी कहते हैं। जो एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।
- विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा सुन्दरवन है।
- सुन्दरवन डेल्टा से गंगा नदी की शाखा नदियाँ जालंगी, इच्छामती, भैरव, विद्याधरी तथा कालिन्दी हैं।
-सुन्दरी नाम वृक्षों के अधिक संख्या में पाये जाने के कारण उस स्थान का नाम सुन्दरवन है।

## गंगा में मिलने वाली सहायक नदियाँ

- गंगा में उत्तर की ओर से यमुना, रामगंगा, घाघरा, ताप्ती, गंडक, कोसी और काक्षी मिलती हैं।
- दक्षिण के पठार से चम्बल, सोन, बेतवा, केन, टोंस आदि नदियाँ प्रमुख हैं।
- **यमुना** गंगा की सबसे प्रमुख सहायक नदी है। यह हिमालय के यमुनोत्री से निकलती है। चम्बल, बेतवा, शारदा और केन नदी यमुना की सहायक नदियाँ हैं।

**रामगंगा**- हिमालय के दक्षिणीभाग नैनीताल के निकट से निकलकर बिजनौर होते हुए कन्नौज के पास गंगा में मिलती है।

**घाघरा**- (करनाली) मप्सातुंग हिमनद से निकलकर अयोध्या, फैजाबाद होती हुई बलिया गंगा में मिलती है।

**गण्डक**- हिमालय से निकलकर नेपाल में शालिग्राम, बिहार में नारायणी नदी के नाम से बहती हुई सोनपुर में गंगा में मिलती है।

**कोसी**- ब्रह्मपुत्र के घाटी दक्षिण से अरूणनदी के रूप में एवरेस्ट के कंचन जंघा शिखरों से होती हुई शिवालिक को पार कर बिहार में गंगा में मिलती है।

**सोन**- अमरकण्टक (म.प्र.) पहाड़ी से निकलकर पटना के पास गंगा में मिलती है।

**चम्बल**- म.प्र. मऊ के निकट जनायव पर्वत से निकलकर इटावा से आगे यमुना में मिलती है।

**बेतवा**- म.प्र. भोपाल से निकलकर हमीरपुर के निकट यमुना में मिलती है।

प्राचीन काल में गंगा-यमुना नदी घने वनों से ढकी हुई रहती थी। इन वनों में सभी प्रकार के लगभग जानवर रहते थे। रंग बिरंगी पक्षियाँ अपने कलरव से गुञ्जायमान रखती थीं। जल में विविध प्रकार की मछलियाँ, सरीसृप, पाये जाते थे। डाल्फिन (सोंस) घड़ियाल भी थे। तटों पर विभिन्न स्तनधारी व अन्य प्रजातियों के वन्य जीव का आश्रय था। कुछ दुर्लभ प्रजातियों को आज संरक्षित किया गया है। बढ़ती हुई जनसंख्या के फलस्वरूप यह प्राकृतिक वनों का स्वरूप नष्ट प्राय है। आज भी डॉलफिन शार्क के कारण विश्व के वैज्ञानिकों की अधिक रूचि है। भारत और बांग्लादेश के लिए गंगा अपने सहायक नदियों के साथ सिंचाई का महत्वपूर्ण स्रोत है। मत्स्य उद्योग, कृषि, औषधीय, वनस्पति, पर्यटन, तीर्थस्थल आदि आर्थिक स्रोत हैं।

## प्रमुख बन्ध एवं परियोजनाएँ

**फरक्का बन्ध**- पश्चिम बंगाल प्रान्त के गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदी हुगली पर बना है।

**टिहरी**- उत्तराखण्ड के टिहरी जिले में है। यह भागीरथी नदी पर बना है। यह विश्व का पाँचवां सबसे ऊँचा बाँध है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्युत, सिंचाई, पेयजल है जो दिल्ली, उत्तर- प्रदेश, उत्तराखण्ड को उपलब्ध कराता है।

**भीमगोडा बैराज**- इसे हरिद्वार में अंग्रेजों ने अस्थायी बनाया था। आज यह कृषि, सिंचाई में सहायक है।

गंगा नदी अपनी शुद्धता, पवित्रता के कारण आरम्भ से ही विश्ववन्द्या है। इसके जल में प्राणवायु (आक्सीजन) की मात्रा बनाये रखने की असाधारण क्षमता है। अभी तक

इसका कारण अज्ञात है। गंगा के जल से हैजा, पेचिश जैसी बीमारियां, महामारियाँ बड़े स्तर पर टल जाती हैं।

-औद्योगिक कचड़े, प्लास्टिक, नगरीकरण, नाले, जनसंख्या ने गंगा को अत्यधिक प्रदूषित कर दिया है।

## गंगा की अविरलता तथा निर्मलता के लिए उपाय

**नमामि गंगे**- गंगा की सफाई के लिए कई पहल के बाद स्थायी सन्तोषजनक परिणाम न मिलने पर प्रधानमंत्री चुने जाने पर भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गंगा नदी में प्रदूषण नियन्त्रण और सफाई पर अभियान चलाया। इसके बाद 2014 में भारत अपने प्रथम आम बजट में 'नमागि गंगे' नामक परियोजना आरम्भ की। इसके तहत 48 औद्योगिक इकाइयों को बन्द करने का आदेश दिया है।

स्वच्छ परियोजन का आधिकारिक नाम **एकीकृत गङ्गा संरक्षण मिशन परियोजना या नमामि गंगे** है। यह प्रधानमन्त्री मा.नरेन्द्र मोदी जी का ड्रीम मिशन है। इस योजना के द्वारा 2500 किमी. की गंगा तट पर 29 बड़े शहर, 48 कस्बे 23 छोटे शहरों में कार्य होने हैं।

- इस योजना का गठन जुलाई 2014 विभिन्न विभागों के संयुक्त दायित्व के साथ हुआ।

- इस परियोजना में केन्द्रीय जलसंसाधन मंत्रालय, नदी विकास और गंगा कायाकल्प, केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड 1984 द्वारा गंगा बेसिन में सर्वे रिपोर्ट में गंगा प्रदूषण पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। इसी आधार पर गंगा नदी में प्रदूषण रोकने के लिए तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी द्वारा गंगा कार्य योजना 1985 का शुभारम्भ किया गया। और पहला गंगा एक्शन प्लान बना। यह 15 साल चला। 1996 में राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना में इसका विलय हो गया। 2009 में राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन अथॉरिटी का गठन हुआ। इसमें गंगा के साथ यमुना गोमती, दामोदर व महानन्दा नदी को भी जोड़ा गया।

- 2011 में इस कार्य के लिए **राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन** का गठन एक पंजीकृत सोसाइटी के रूप में किया गया।

- नमामि गंगे द्वारा निजी क्षेत्र, व्यक्तिगत लोगों को जागरूक करना, आधुनिक शवदाह गृह, मॉडल धोबीघाट और घाटों का सुन्दरीकरण होना है।

- स्वच्छ गंगा निधि में गंगा स्वच्छता के लिए धनराशि का योगदान भी कर सकते हैं। आइये हम सभी हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और विरासत के प्रतीक हमारी राष्ट्रीय नदी गंगा को सुरक्षित करने के लिए एक साथ आयें।

-प्रथम बार गंगा अविरलता निर्मलता के लिए पृथक मंत्रालय बना।

## उत्तर-प्रदेश 'नमामि गङ्गे' जागृति यात्रा, गङ्गा हरीतिमा योजना

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी ने 'नमामि गंगे' जागृति यात्रा' का शुभारम्भ किया। होमगाड्र्स संगठन द्वारा जनपद बिजनौर से बलिया तक यात्रा सम्पन्न हुई। गङ्गा नदी के प्रवाह क्षेत्रों में मृदाक्षरण को रोकने एवं तटीय क्षेत्रों में हरियाली बढाने के उद्देश्य

से मा0 मुख्यमन्त्री जी ने गङ्गा हरीतिमा योजना का शुभारम्भ किया। यह योजना राजय के 27 जिलों में हुयी है। जो गङ्गा नदी के तट पर स्थित हैं। इस योजना के अन्तर्गत नदी के तटों पर 1 किलोमीटर तक के क्षेत्रों में वृक्षारोपण करना मुख्य है। इसके अलावा प्रदेश के लोग अपनी निजी भूमि पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें अतः **'एक व्यक्ति एक वृक्ष'** का नारा भी दिया है।

सरकार की विभिन्न योजनाओं के बावजूद गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करना, इसकी अविरलता निर्मलता को अक्षुण्ण बनाये रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, तथापि इस राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, औद्योगिक अभियान में सरकार के साथ-साथ निजी संस्थाएँ, उपक्रम, धार्मिक-सामाजिक संगठन भी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से जुड़ें। गंगा के आस-पास रहने वाले सभी वासी एक-एक वृक्ष का आरोपण, गंगा की स्वच्छता अपना नैतिक कर्तव्य समझें। सभी लोगों को पूर्ण सकारात्मक ऊर्जा के साथ इस अभियान से जुड़ना चाहिए।

## प्रश्नोत्तराणि

1. **स्रोतसामस्मि जाह्नवी-** अर्थात् सभी प्रवाहों में मैं गङ्गा हूँ। इति कः उक्तवान्?
   -श्रीकृष्णः, (श्रीमद्भगवद्गीता-10-31 विभूतियोगः)
2. **गङ्गाष्टकम् स्तोत्रस्य रचयिता कः अस्ति?** - महर्षिः वाल्मीकिः
3. **गङ्गालहरी- स्तोत्रस्य रचयिता** - पण्डितराज जगन्नाथः
4. **हिन्दुधर्मे मृत्युकाले मुखे कस्याः नद्याः जलं स्थाप्यते?** - गङ्गानद्याः।
5. **मृतात्मा- मुक्तये अस्थिप्रवाहः कुत्र क्रियते?** - गङ्गायाम् ।
6. **गङ्गानदी कुत्र विलीयते?** - बंगाल की खाड़ी
7. **देवनदी कस्याः नद्याः संज्ञा अस्ति?** - गङ्गानद्याः
8. **'नमामि गङ्गे' योजनायाः शुभारम्भः कः अकरोत्** - प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी
9. **नदी संरक्षणाय प्रथमबारं किं जातम् ?**- केन्द्रीय जलसंसाधनमंत्रालयः
10. **गङ्गावतरणम् कस्य रचना अस्ति?** -जगन्नाथ दास रत्नाकरः
11. **कपिलमुनेः शापाद् राज्ञः सगरस्य 60 सहस्रपुत्राणां उद्धारः कथम् अभवत् ?**
    -भागीरथी गङ्गाजलस्पर्शेण
12. **गङ्गानदी राष्ट्रीयनदी कदा समुद्घोषिता?** - नवम्बर 2008
13. **हिन्दुधर्मे स्थान-व्यक्ति-वस्तुप्रभृतीनां शुद्धीकरणं कथं मन्यते?**
    - तीर्थजलेन (विशेषेण गङ्गाजलेन)
14. **गौ, गङ्गा, गीता, गायत्री- हिन्दुधर्मे विशिष्टं सम्बोधनं किम् अस्ति?** - माँ, देवी
15. **विश्वस्य बृहत्तमं डेल्टा स्थानं किम् अस्ति?** - सुन्दरवनम्
16. **फरक्का नदी बन्धः कस्यां नद्यां निर्मितोऽस्ति?** - गङ्गानद्याम्
17. **गङ्गानद्याः स्वच्छतायै प्रथमा योजना का निर्मिता**- गंगाकार्ययोजन 1985
18. **गङ्गानद्याः उद्गमस्थलं किम् अस्ति?** - गंगोत्री (हिमालयः)
19. **भारते कृषि कर्मणि सिञ्चनव्यवस्थायाः आधारः** - नद्यः, कुल्यः (नहरें)

20. **'हरिद्वारम्' कस्याः नद्याः तटे स्थितम् अस्ति?** - गङ्गानद्याः
21. **चम्बलनद्याः उद्गमस्थलं किम् अस्ति?** - जनायब पर्वतः
22. **कस्य देशस्य कृषि-कर्मणि महत्त्वपूर्णं साधनं गङ्गानदी अस्ति?**- भारतस्य, बांग्लादेशस्य
23. **कः राजा स्व-तपोबलेन गङ्गां पृथिवीम् आनीतवान् ?** - राजा भगीरथः
24. **कस्य जटायां माँ गङ्गा विराजते?** - भगवतः शिवस्य
25. **कश्चिद् गङ्गायां अपशिष्टानि प्रक्षिपति, दृष्ट्वा भवान् किं करिष्यति?** अवरोधं करिष्यामि निवेदनेन सह
26. **गण्डकनदी कस्याः नद्याः उपनदी अस्ति?** - गङ्गा
27. **जलसंसाधन-मन्त्री कः अस्ति?** - साध्वी उमा भारती
28. **पञ्चप्रयागः किम् कथ्यते?**- विष्णुप्रयागः, नन्दप्रयागः, कर्णप्रयागः, रूद्रप्रयागः, देवप्रयागः
29. **सर्वप्रथमं गङ्गानदी प्रर्वतात् कस्मिन् स्थाने प्रवहत् ?** - हरिद्वारम्
30. **कस्याः नद्याः तटे कुम्भपर्वः आयोज्यते?**- गङ्गा, गोदावरी, शिप्रा
31. **गङ्गापुत्र नाम्ना कः कथ्यते?**- सत्यव्रतः
32. **गङ्गायाः विवाहः केन राज्ञा सह अभूत् ?** - शान्तनु- राज्ञा सह
33. **नमामि गङ्गे योजनायाः आधिकारिकं नाम किम् अस्ति?** -एकीकृत गङ्गा संरक्षण-मिशन।
34. **गङ्गायाः प्रवाहदूरी (लम्बाई)**- 2525 कि0 मी0
35. **गङ्गायाः प्रवाहदूरी (लम्बाई) उत्तरप्रदेशे**- 1000 कि0 मी0
36. **नमामि गङ्गे योजनायाः** क्रियान्वयनं त्रिस्तरे भवति- राष्ट्रीय गङ्गा परिषद्, राज्य गङ्गा समिति, जनपदगङ्गासमिति।
37. **एन.जी.टी. किम् अस्ति?** नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल
38. **गङ्गानद्याः तटे कति मुख्य-नगराणि सन्ति?**- 97 (नव सप्ततिः)
39. **केन केन उद्योगेन गङ्गा सर्वाधिक-प्रदूषिता भवति?**- शर्करा-उद्योगः, कर्गद-निर्माणोद्योगः, मल-प्रवाहिका (सीवर), प्रदूषितं रासायनिकं जलम्
40. **नेशनल गङ्गा रिवर बेसिन अथॉरिटी- संस्थायाः गटनं कदा अभवत्?**- फरवरी,2009
41. **राष्ट्रीय गङ्गापरिषद्- अस्याः गटनं कदा जातम् ?**- अक्टुवर 2016
42. नमामि गङ्गे योजनायां कति नद्यः सम्मिलिताः सन्ति?- 40 (चत्वारिंशत्)
43. गङ्गायां कः राष्ट्रीयजलमार्गः निर्मीयते?- राष्ट्रीयजलमार्गः (वाराणसी- हल्दिया 1680 कि.मी.)

## गंगास्तुति

**गंगां वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतं। त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु मां।।**

अर्थात् गंगा का जल जो मनोहारि है, विष्णु के श्रीचरणों से जिसका जन्म हुआ है, जो भगवान् शंकर के सिर पर विराजित हैं, जो पापहारिणी है, हे माँ तू मुझे शुद्ध कर।

# वृक्षाणां/पादपानां/वनस्पतीनां महत्त्वम्

भारतीय संस्कृति में वृक्षों का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म में वृक्षों को प्रत्यक्ष देवता माना गया है। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं 'वृक्षाणाम् अश्वत्थोऽहम्' अर्थात् वृक्षों में मैं अश्वत्थ (पीपल का वृक्ष) हूँ। इसी तरह केले में गुरुदेव वृहस्पति (भगवान् विष्णु) का तुलसी को भगवान् विष्णु की प्रिया ही हैं। आदिकाल से ही मनुष्य पेड़ की छाल के कपड़े पहनता था, फल-फूल खाता था, लकड़ी के अस्त्र-शस्त्र बनाकर शिकार करता था। लकड़ी जलाकर रक्षा और भोजन करते थे। वृक्ष वर्षा एवं बाढ़ में भूमि के कटाव को रोकते हैं, ग्रीष्म ऋतु में प्रचण्ड सूर्य के ताप से छाया व स्वच्छ हवा द्वारा हमारे जीवन की रक्षा करते हैं। अतः वृक्षों को काटना पाप माना जाता है। वृक्ष न केवल वर्षा में सहायक हैं अपितु इनसे हमें फल, फूल, सब्जियाँ औषधि, आक्सीजन प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते हैं। अधिक से अधिक वृक्षों के रोपण से सूखा, अकाल, जलसंकट, बाढ़ (जल प्रपात) आदि को आसानी से टाला जा सकता है। वृक्षों में हमारा पर्यावरण शुद्ध तथा संतुलित रहता है इससे हमारा स्वास्थ्य, आरोग्य, दीर्घायु होता है। वृक्षों पशु-पक्षियों के लिए प्राकृतिक आवास भी होते हैं। वृक्षों से ग्लोबल वार्मिंग जैसे परिस्थितियों पर नियन्त्रण पाया जा सकता है।

**धर्मशास्त्रों के अनुसार किस प्रकार के वृक्षारोपण से क्या फल मिलता है-**

| वृक्ष | लाभ | वृक्ष | लाभ |
|---|---|---|---|
| पाकड | ज्ञान तथा सुन्दर स्त्री | बेल (बिल्वः) | दीर्घायु |
| जामुन (जम्बू) | धन | तेंदू | कुल की वृद्धि |
| बबूल | पाप का नाश | वजुल | बल और बुद्धि |
| बरगद (वटः) | मोद (प्रसन्नता) | आम (आम्रम्) | अभीष्ट फल |
| सुपारी | सिद्धि | महुआ (मधुकः), अर्जुन-अन्न | |
| कदम्ब | लक्ष्मी | इमली | धर्माचरण का क्षय |
| शमी | आरोग्य | केशर | शत्रु नाश |
| कटहल | मन्द बुद्धि | केवाच (मर्कटी) | सन्तति का क्षय |
| अशोकः | शोक नहीं होता है। | | |

बडी से बडी विपत्ति से छुटकारा मिलता है।

**शीशम, अर्जुन, जयन्ती, करवीर, बेल, तथा पलाश** स्वर्ग की प्राप्ति।

भविष्य पुराण के अनुसार जो व्यक्ति छायादार तथा फल-फूल, देने वाले वृक्षों को मार्ग, मन्दिर, नदी, तडाग आदि के किनारे लगाता है वह अपने पूर्वजों को पापों, दुःखों से

तारता है, उन्हे ऋणमुक्त करता है, और ऐसे वृक्षों को लगाने वाला स्वयं इस मनुष्य लोक में महान यश तथा शुभ परिणाम प्राप्त करता है। अतः-

- माँ की ममता वृक्ष का दान दोनों करते जन कल्याण।
- वृक्ष की महिमा अपरंपार देते हमको जीवन हजार ।
- एक वृक्ष सौ पुत्र समान।

**दश कूप-समा वापी तडागो दश वापी-समाः।**

**तडागाः दश पुत्र-समाः दश-पुत्र-समो वृक्षः।।**

अर्थात् दश कूयें के समान एक बावली, दश बावलियों के समान एक तालाब, दश तालाबों के समान एक पुत्र और दश पुत्र के समान एक वृक्ष होता है।

## सम्बन्धित कुछ अन्य महत्त्व-

- वृक्ष प्रकाश संश्लेषण क्रिया के द्वारा अपना भोजन स्वयं बनाते और लेते हैं।
- आज भी वृक्ष हमें प्राणवायु (आक्सीजन) देते हैं जिससे हमारा जीवन चलता है।
- वृक्ष लगाना, संरक्षण करना पुत्र के समान है काटना पुत्र के लिए अमङ्गल माना जाता है।
- वृक्ष हमारे मित्र, माता-पिता, देवता आदि के समान हैं।
- वृक्षों (वानकी) की हरीतिमा नेत्रों को रोशनी प्रदान करती है, मन-मस्तिष्क को स्वस्थ रखती है।
- इनकी पत्तियाँ गिरकर खाद के रूप में पृथ्वी को उर्वरा बनाती हैं।
- महात्मा बुद्ध, आदि शंकराचार्य, महर्षि वाल्मीकि आदि ऋषि मुनियों ने इन वृक्षों के नीचे तप किया, वेद उपनिषद् आदि विविध शास्त्रों की रचना की। प्रसिद्ध तीर्थ गया (बिहार) में अश्वत्थ वृक्ष के नीचे महात्मा गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त हुआ।
  वट वृक्ष को देव वृक्ष भी कहते हैं, इसमें सभी देवों का वास होता है। अक्षय वट भगवान् श्रीकृष्ण प्रलय काल में इसी के पत्ते पर बालरूप में सप्तर्षियों को दर्शन दिये थे। प्रायागराज में आज भी अक्षय वट है।
- वट के नीचे ही सती सावित्री ने अपने पति सत्यवान के प्राण यमराज से वापस लिए। आज भी हिन्दू धर्म में स्त्रियाँ अपने पति के दीर्घयु तथा अखण्ड सौभाग्य के लिए वटसावित्री का व्रत-पूजा करती हैं।
- पञ्चवटी- पीपल, बेल, बरगद, आँवला, अशोक इन छायादार वृक्षों के वन को पञ्चवटी कहते है। वनवास के समय मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम दण्डकारण्य के पञ्चवटी में बहुत दिनों तक निवास किया था।
- वन किसी भी देश के अमूल्य धन होते हैं। वृक्ष नाइट्रोजन लेते हैं, आक्सीजन देते हैं।
- अपनी जड़ों से जल को ग्रहण कर मृदा-क्षरण, नदियों का प्रवाह नियन्त्रित रहता है।
- महान क्रान्तिकारी पं. चन्द्रशेखर तिवारी (आजाद) ने इलाहाबाद (अल्फ्रेड पार्क) उद्यान में वट वृक्ष के नीचे ही अपने वचन पालन किये और आजाद- आजाद ही रहे।

- श्री रविन्द्र नाथ ठाकुर ने वृक्षों की सघनता में (शान्ति निकेतन) पाण्डिचेरी में स्थापित किया।
- वृक्षों की सूखी लकड़ियाँ औषधि, इन्धन, आवास, अन्य साज सामान में अत्यन्त उपयोगी हैं।
- मानव और विश्व के लिए, धरा और अम्बर के लिए, जल और जीवन के लिए वृक्षों का जीवन और मृत्यु दोनों उपकारक हैं।

## वृक्ष विनाश - वृक्षारोपण ही उपाय

आज बढ़ती जनसंख्या का विकराल रूप तथा मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति ने वृक्षों और वनों को विनाश की ओर उकसाया है। नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, घर-फर्नीचर, व्यापार और व्यवसाय के लिए निर्ममता पूर्वक वृक्ष काटे जा रहे हैं। वनों का संहार किया जा रहा है। जिससे समस्त पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ गया है। ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषित पर्यावरण, पेयजल संकट, आदि पर पूरे विश्व सम्मेलन पर सम्मेलन किये जा रहे हैं। वृक्षारोपण एवं वनों की रक्षा की पुकार कर रहे हैं ।

- औद्योगीकरण के इस नवीन युग में वृक्षों के प्रति पूज्यभाव समाप्त ही हो गया है। जबकि हमारी भारतीय संस्कृति में जड-चेतन सभी को पूज्य स्थान दिया गया है। हमारे यहाँ पशु-पक्षियों, वृक्ष-वनस्पतियों, नदी-समुद्रों, वन-पर्वतों आदि सभी अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण पूजित होते हैं। ये हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अङ्ग हैं अतः इन्हें परिवार तक माना गया है। भारतीय संस्कृति ही प्रकृति को महत्व देते हये पूजा करती है।
- जनसंख्या वृद्धि के कारण वृक्षों, वनों, जंगलों, बाग-बगीचों के स्थान पर दुकान, भवन, बड़ी-बड़ी इमारतें, फैक्ट्रियाँ कल-कारखाने लगने लगे हैं।
- सड़कों की जाल बिछाने के लिए प्रतिदिन हजारों पेड़ काटे जा रहे हैं। वर्षों बीत जाते हैं वहाँ वृक्षारोपण नहीं होता है।

## वृक्षारोपण एवं वानकी के लिए सरकारी प्रयास

- वृक्षों के कटाव, वनों के विनाश से उत्पन्न समस्याओं से मुक्ति के लिए पूरा विश्व जागरूक है। हमारे देश भारत में सरकार ने सर्वप्रथम 1950 में **वन महोत्सव** नामक योजना का शुभारम्भ किया। इस योजना के द्वारा नये वृक्ष आरोपित किये गये फिर भी योजना की शिथिलता, लोगों में जागरुकता व सचेष्टता की कमी देख 12 नवम्बर को केन्द्र सरकार ने सभी राज्यों को निर्देश दिया कि सरकार की अनुमत लिये बिना किसी भी राज्य में वृक्षों, जंगलों की कटाई नहीं होगी। इसके लिए केन्द्रीय कृषि व सिंचाई मंत्रालय के वन विभाग के महानिरीक्षक से पूर्व अनुमति लेनी होगी।
- प्रतिवर्ष वन महोत्सव का आयोजन किया जाता है। स्कूल-कालेजों में वृक्षारोपण एवं विविध आयोजन होते हैं।

## भारत के राजकीय - राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य

| | अभ्यारण्य/राष्ट्रीय उद्यान | स्थान/राज्य |
|---|---|---|
| 1. | काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान | जोरहाट (असम) |
| 2. | मानस बाघ अभ्यारण्य | बारपेटा (असम) |
| 3. | केवला देव राष्ट्रीय उद्यान | भरतपुर (राजस्थान) |
| 4. | सुन्दरवन, बाघ अभ्यारण्य | 24 परगना (पं0 बंगाल) |
| 5. | बान्धवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान | शहडोल (म0प0) बंगाल टाइगर की प्रसिद्धि |
| 6. | कान्हा राष्ट्रीय उद्यान | मंडला, मध्य प्रदेश |
| 7. | दुधवा राष्ट्रीय उद्यान | लखीमपुर उत्तर प्रदेश |
| 8. | चन्द्रप्रभा अभ्यारण्य | वाराणसी उत्तर प्रदेश |
| 9. | कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान | नैनीताल, उत्तराखण्ड (भारत प्रथम राष्ट्रीय उद्यान 1935 में बना यहाँ से रामगंगा नदी बहती है। |
| 10. | राजाजी राष्ट्रीय उद्यान | देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल |
| 11. | दाचीगम राष्ट्रीय उद्यान | श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) |
| 12. | रणथम्भौर (बाघ अभ्यारण्य) | जयपुर राजस्थान |
| 13. | घटाप्रभा पक्षी अभ्यारण्य | बेलगाम कर्णाटक |
| 14. | गिर राष्ट्रीय उद्यान | जूनागढ़, गुजरात |
| 15. | हजारीबाग नेशनल पार्क | हजारी बाग, झारखण्ड |
| 16. | पेरियार अभ्यारण्य | इडडुकी (केरल) जंगली हाथियों के लिए प्रसिद्ध है। |
| 17. | गहिरमाथा कछुआ अभ्यारण्य | केन्द्रपाड़ा (उड़ीसा) |
| 18. | विक्रमादित्य गांगेय डाल्फिन | भागलपुर (बिहार) |
| 19. | रानी झांसी मरीन नेशनल पार्क | अंडमान निकोबार द्वीप समूह |
| 20. | साइलेंट वैली नेशनल पार्क | पलक्कड़ (केरल) |
| 21. | | |

1-4 नं. तक का यूनेस्को द्वारा प्रसिद्ध विश्व धरोहर स्थलों में सूचीबद्ध है।

- **भारत के जंगल-** देश के भौगोलिक क्षेत्र का 23 प्रतिशत हैं।
- **देश में सर्वाधिक उद्यान-** मध्य प्रदेश में है।
- **भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान-** जम्मू-कश्मीर (लेह) में है। इसका नाम हिमिस है।
- **भारत का सबसे बड़ा बाघ अभ्यारण्य-** नागार्जुन सागर आन्ध्र प्रदेश में है।
- **सबसे अधिक वन्यजीव-** अंडमान निकोबार द्वीप समूह।
- **नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान (फूलों की घाटी)-** उत्तराखण्ड
- **विश्व वन्य जीव कोष का प्रतीक-** पांडा है।

# वरिष्ठवर्गः कक्षा- 9, 10, 11, 12

1. स्वतन्त्रभारतस्य प्रथम शिक्षामन्त्री कः आसीत् ? मौलाना अबुल कलाम आजादः
2. भारतस्य प्रथम समाचारपत्रं किम् अस्ति? बंगाल गजट
3. सिखधर्मस्य संस्थापक गुरुः कः अस्ति? गुरुनानकदेवः
4. भारतस्य स्वतन्त्रतायाः घोषणा केन कृता? लार्ड माउण्ट बेटन
5. शान्तिनिकेतनस्य स्थापनां कः अकरोत् ? देवेन्द्रनाथ टैगोर
6. भारते आपातकालस्य घोषणां कः कर्तुं शक्नोति? राष्ट्रपतिः
7. शासनस्य कति अङ्गानि सन्ति? त्रीणि - व्यवस्थापिका, कार्यपालिका न्यायपालिका
8. राष्ट्रियवाक्यं 'सत्यमेव जयते' कस्मात् गृहीतः? मुण्डकोपनिषदः
9. काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य संस्थापकः कः आसीत् ? पं. मदनमोहनमालवीयः
10. सूर्यस्य सन्निकटः ग्रहः कः अस्ति? बुधः
11. विश्वस्य बृहत्तमः महासागरः कः अस्ति? प्रशान्तमहासागरः
12 सन्तकबीरदासस्य प्रयाणस्थलं किम् अस्ति? मगहर-वस्ती
13. सिन्धुघाटी सभ्यतायाः जनाः कस्य पूजां कुर्वन्ति स्म? पशुपतेः
14. भारतस्य ध्वजनिर्माणं सर्वप्रथमं कः अकरोत् ? वीरसावरकरः
15. महाकविकालिदासस्य कानि त्रीणि नाटकानि सन्ति?
-अभिज्ञानशाकुन्तलम् विक्रमोर्वशीयम् मालविकाग्निमित्रम् 16.
आद्यगुरुः शंङ्कराचार्यः शूद्रज्ञानं कुत्र प्राप्तवान् ? काश्मीरे
17. भारतीय रिजर्व बैंक इत्यस्याः संस्थायाः अध्यक्षः कः? उर्जित पटेलः
18. वृहत्त्रयी मध्ये के ग्रन्थाः सन्ति? शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरित्रम्
19. 'कार्यं वा साधयेयम देहं वा पातयेयम्' कस्य प्रेरकवाक्यम् अस्ति? छत्रपति शिवाजी
20. वीरतायाः सर्वोच्च पुरस्कारः किम् अस्ति? परमवीरचक्रम्
21 भारतस्य उत्तरदिशायां कः पर्वतराजः अस्ति? हिमालयः
22 भारतीय संस्कृतौ कति वर्णाः सन्ति? चत्वारः (ब्रह्मणः, क्षत्रियः, वैश्यः, शूद्रः)
23. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' कुत्रत्यस्य वाक्यम् अस्ति? श्रीमद्भगवद्गीतायाः
24. महापुरुषाणां मुख्य-मार्गाः के सन्ति? अहिंसा, दया, प्रेम, शान्तिः, उदारता, परोपकारः
25. प्रयागे कासां नदीनां संगमः अस्ति? गंगा, यमुना, सरस्वती
26. भगवतः रामस्य जन्म कुत्र अभवत् ? अयोध्या
27. पाण्डवाः किं नगरं निर्मीतवन्तः ? इन्द्रप्रस्थम्
28. राज्ञीलक्ष्मीबाई वाराणस्यां कुत्र जन्म अलभत् ? अस्सी
29. अर्जुनस्य शंखस्य नाम किम् आसीत् ? देवदत्तः
30. 'कम्प्यूटर' संस्कृते किम् उच्यते? संगणकः
31. 'गानप्रधानः' वेदः कः अस्ति? सामवेदः
32. वायुसेनायाः आदर्शवाक्यं किम् अस्ति?नभः स्पृशं दीप्तम्
33. 'अमरनाथ' तीर्थस्थलम् कस्मिन् राज्ये अस्ति? जम्मूकश्मीरे
34. 'गीतारहस्यम्' कः स्वतन्त्रतासेनानी अलिखत् ? लोकमान्यबालगंगाधर तिलकः
35. 'विश्वहिन्दीदिवसः कदा मान्यते? 10 जनवरी
36. शासनस्य नीति चतुष्टयं किम् अस्ति? साम, दाम, दण्ड, भेदः
37. क्रीडकेभ्यः सर्वश्रेष्ठपुरस्कारः किम् अस्ति? अर्जुनपुरस्कारः
38. टिहरीबन्धः कस्याः नद्याः उपरि अस्ति? गङ्गानदी
39. 'संस्कृतभाषायाः' महत्त्वम् पञ्च वाक्यानि लिखन्तु।
40. ज्ञानगंगा ग्रन्थ विषये पञ्च वाक्यानि लिखन्तु।

# भारतीयवैभवज्ञान-परीक्षा-प्रश्नोत्तरी - 2010

वरिष्ठ-वर्गः (कक्षा- 9, 10, 11, 12)

1. आयुर्वेद-शास्त्रस्य प्रवर्तकः कः आसीत् ?
   (क) पाणिनिः ○ (ख) धन्वन्तरिः ○ (ग) कपिलः ○ (घ) कणादः ○
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् किम् अस्ति?
   (क) महाकाव्यम् ○ (ख) नाटकम् ○ (ग) दूतकाव्यम् ○ (घ) किमपि न ○
3. भारतस्य प्राचीना मूललिपिः का ?
   (क) गूढलिपिः ○ (ख) भित्तिलिपिः ○ (ग) चित्रलिपिः ○ (घ) ब्राह्मीलिपिः ○
4. स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमः शिक्षामंत्री कः आसीत्?
   (क) अबुल क. आजादः ○ (ख) एस. राधाकृष्णन् ○
   (ग) अब्दुल्ला खानः ○ (घ) जवाहरलाल नेहरू ○
5. पृथ्वी वर्तुला अस्ति, इति कः उक्तवान्?
   (क) भाष्कराचार्यः ○ (ख) बाणभट्टः ○ (ग) आर्यभट्टः ○ (घ) ब्रह्मगुप्तः ○
6. शकुन्तलायाः पिता कः आसीत् ?
   (क) कण्वः ○ (ख) दुर्वासा ○ (ग) विश्वामित्रः ○ (घ) दुष्यन्तः ○
7. भारतीय-आर्याणां भाषा का?
   (क) संस्कृतम् ○ (ख) उर्दू ○ (ग) फारसी ○ (घ) ईरानी ○
8. वैज्ञानिक परिपाट्या 'सूर्यः' किम् अस्ति?
   (क) ग्रहः ○ (ख) उपग्रहः ○ (ग) परमाणुः ○ (घ) कौमुदीः ○
9. 'सत्यमेव जयते' कस्मात् ग्रन्थात् गृहीतः?
   (क) ईशावास्योपनिषदः ○ (ख) केनोपनिषदः ○
   (ग) माण्डूक्योपनिषदः ○ (घ) मुण्डकोपनिषदः ○
10. ब्रह्मसूत्रम् , गीता, उपनिषद एतेषां समूहः किम् कथ्यते?
    (क) शक्तित्रयी ○ (ख) प्रस्थानत्रयी ○ (ग) बृहत्त्रयी ○ (घ) लघुत्रयी ○
11. कस्य प्रान्तस्य प्रसिद्धि 'समुद्रपुत्र' नाम्ना अस्ति?
    (क) कश्मीरस्य ○ (ख) उत्कलस्य ○ (ग) लक्षद्वीपस्य ○ (घ) महाराष्ट्रस्य ○
12. गुप्तवंशे कस्य शासनकालः स्वर्णयुगम् कथ्यते?
    (क) श्रीगुप्तस्य ○ (ख) स्कन्दगुप्तस्य ○ (ग) चन्द्रगुप्तस्य ○ (घ) समुद्रगुप्तस्य ○
13. स्वेच्छया कमपि एकं श्लोकं लिखन्तु? .....
14. राजन् शब्दस्य द्वितीया, तृतीया विभक्तेः सर्वाणि रूपाणि लिखन्तु।....
15. षड् ऋतूनां नामानि लिखन्तु।.....

# गंगा हरीतिमा योजना को समर्पित
# भारतीय वैभव ज्ञान परीक्षा-2018-19